कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः12, अंकः02 नवम्बरः 2012

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

इस अंक में......

भारतीय जनसंघ का उत्थान, पतन तथा वर्तमान में प्रासंगिकता 06
-पूनम राजपुरोहित

शिक्षा व साहित्य संस्कृति के संवाहक...............11
-डॉ० संतोष गौड़ 'राष्ट्रप्रेमी'

क्रांतिकारी वीर उपेक्षित क्यों?.........................12
-डॉ० इकबाल अहमद मंसूरी

रंगीले चिरौंजीलाल 13
-डॉ० सुरेश प्रकाश शुक्ल

सुरक्षा की दृष्टी में नारी.................19
-संतोष शर्मा 'शान'

स्थायी स्तम्भ

प्रेरक प्रसंग	04
अपनी बात	05
व्यक्तित्व	15
पर्व विशेषः पाँच उत्सवों का पर्व—दीपावली	17
कविताएँ	18,27,28
आम के पेड़ में बबूल के कांटे कैसे उगें (कहानी) : डॉ0 तारा सिंह	21
अध्यात्म	23
बाल कोना	25
युवा रचनाकार	26
लघु कथाएँ	29
आपकी डाक	30
स्वास्थ्य	31
साहित्य समाचार	10,22,24,33
समीक्षा	34

सहयोग राशि

एक प्रति	: रु0 10/–
वार्षिक	: रु0 110/–
पंचवर्षीय	: रु0 500/–
आजीवन सदस्य	: रु0 1500/–
संरक्षक सदस्य	: रु0 5000/–

संपादकीय कार्यालय
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0ः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित कराया गया.

पत्रिका में प्रकाशित अपनी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

अपनी बात

थोक व खुदरा बाजार की कीमतों में इतना अंतर क्यों?

आजकल अगर बाजार में नजर डाले तो वस्तुओं के खुदरा व थोक मूल्य सूचकांक में दोगूने का अंतर दिखाई पड़ता है. इस अंतर को नियत्रित करने वाला कोई नहीं है. राज्य सरकारें कहती हैं कि केन्द्र सरकार इसके लिए जिम्मेदार है और केन्द्र सरकार कहती है राज्य सरकारें. हम उपभोक्ता इस हकीकत को समझने में असमर्थ रहते हैं-केन्द्र या फिर राज्य सरकारें? इसी उधेड़बुन में नेताओं को कोसकर, चाय की दुकानों, अपनी बैठकों, चौक-चौराहों पर अपनी भड़ास निकालते रहते हैं. दोगुने का अंतर वह भी शब्जियों व रोजमर्रा की सामान्य उपयोगी वस्तुओं में अधिक है. उदाहरण के तौर पर आलू का वर्तमान थोक मूल्य 950—1000रुपये प्रति कुन्तल जबकि खुदरा मूल्य 20 रुपये किलो, इसी तरह प्याज, परवल, नेनुआ, सेव, संतरा इत्यादि में भी वही हाल है. इन वस्तुओं के थोक व खुदरा मूल्य सूचकांक के अंतर को नियत्रित करने वाला कोई नहीं है. इसके लिए प्रत्येक राज्य में जिला स्तर से लेकर बाजार स्तर तक अधिकारी व कर्मचारी नियुक्त हैं. अलग से इसका एक विभाग है लेकिन विभाग के निरीक्षकों को इनसे मिले नजरानों को गिनने से फुर्सत कहां?

डीजल के दाम बढ़े 5 रुपये प्रति लीटर. टैक्सी/टैम्पों/बसों का किराया बढ़ा प्रति सवारी दो से पांच रुपये. सामान्यतः बी, सी, और नीचे स्तर के शहरों में 11 सवारी एक टैम्पों में बैठती है. अधिकतम दूरी 10—15 किलोमीटर. एक लीटर में इन टैक्सी/टैम्पों के द्वारा चली गयी दूरी 20—25 किलोमीटर यानी आने जाने का खर्च एक लीटर, दाम बढ़ पांच रुपये, वसूला जा रहा है 110रुपये. जितनी बार डीजल का रेट बढ़ता है चाहे वह एक रुपये बढ़े या दो रुपये उतनी बार किराया बढ़ा दिया जाता है, लेकिन अगर भूलवश कभी घट गया तो घटाया नहीं जाता. यही हाल लम्बी दूरी के भारवाहक साधनों का भी है. जो बाजार में महंगाई बढाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं.

अगर इसकी तह में जाने का प्रयास करें तो पायेंगे कि इसके पीछे वोट की राजनीति है. टैम्पों, ट्रक, बस, रिक्शा चलाने वाले, शब्जी बेचने वाले, खुदरा व्यापार करने वाला एक विशेष वर्ग है जो चुनाव के समय खुलकर राजनीतिक पार्टियों का सहयोग करते हैं. सपरिवार धूप-छांव, बरसात की परवाह किये बिना वोट डालने जाते हैं. पार्टियों के विधायक, व सांसद चुनने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं. बुद्धजीवी वर्ग व अन्य वर्ग तो चुनाव के दिन परिवार के बीच बैठकर, घूमकर समय गंवाने में, वोट न देने में अपनी शान समझते हैं. धूप तेज है, बरसात हो रही है कौन जाये वोट देने, परिवार को कौन ले जाए. अगर स्वयं वोट देने चले भी गये तो परिवार को कौन ले जाए. इसका परिणाम यह होता है कि वह व्यक्ति चुन लिया जाता है जिसे जाति/धर्म/सम्प्रदाय विशेष के लोग वोट देते हैं और जब सरकारे बनती हैं तो अपने वोट की लालच में इनके खिलाफ कार्यवाही करने से डरती है. चूंकि वोट जाति विशेष का है इसलिए अन्य पार्टिया भी इनके खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत नहीं दिखा पातीं है. भले ही उन्हें ज्यादे वोट न मिले हो, कुछ तो मिलता है, शेष कुछ और की लालच में. अभी भी बहुत कुछ नहीं बिगड़ा है. आगामी चुनावों में वोट देने अवश्य निकलें. अन्यथा सिवाय बैठक में बहस करने के कुछ हाथ नहीं लगने वाला. वोट दीजिए, सही प्रत्याशियों को वोट दीजिए. सब कुछ सुधरेगा, महंगाई नियत्रित होगी, भ्रष्टाचार नियंत्रित होगा, सुशासन होगा. बस आपको चेतने की जरूरत है. वरना हाथ मलने सिवा और कोई विकल्प नहीं बचेगा.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

प्रेरक प्रसंग

बिनु सत्संग विवेक न होई,
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।

रामचरित मानस २/७

शाब्दिक अर्थः सत्संग के बिना विवेक नहीं होता और श्रीराम जी की कृपा के बिना वह सत्संग सहज में मिलता नहीं।

इस चौपाई को आध्यात्मिक रूप से नहीं बल्कि व्यावहारिक रूप से समझना परमावश्यक है. संसार में जितने भी प्राणी है उन सबमें जीवन यापन की यथा आहार, निद्रा, भय समान रूप से पाये जाते हैं. परन्तु विवेक केवल मनुष्य में मिलता है. अब प्रश्न यह उठता है कि यह विवेक कहां से प्राप्त हो. मनुष्य के जन्म से लेकर उसकी माता, पिता, बन्धु, गुरू इत्यादि सब लोग उसको जीवन यापन की विधाएँ समझाते हैं और यह समस्त मनुष्यों में समान रूप से परिलक्षित होता है परन्तु विवेक सत्संग के बिना प्राप्त नहीं होता. सत्संग केवल आध्यात्म का विषय नहीं है वह मनुष्य को हर पग पर प्रयोग करना पड़ता है. अगर आपमें विवेक नहीं होगा तो आप राह चलते गड्ढे में गिर सकते हैं परन्तु यहां पर विवेक का अर्थ बहुत गूढ़ है. संसार को सही मार्ग पर चलने की शिक्षा देना और उसके अनुसार विवेक का प्रयोग करना बहुत आवश्यक होता है. विवेक से जुड़ा एक शब्द है विचार. विचार अर्थात विश्व की चाहना से रहित. यह सोच जब मनुष्य के अन्दर आ जाती है तब वो सही मायने में विवेक का प्रयोग कर पाता है. एक डकैत यदि अपना विवेक छोड़ देता है तो उसको मनुष्य को मारने में लूटने में कतई देर नहीं लगता है. पर क्या यह न्याय संगत होता है? इसी प्रकार संसार की तमाम विधाएं बगैर विवेक के प्रयोग के गलत परिणाम देती है.

रामकृष्ण गर्ग

41बी/2ए/1,साकेत नगर, हनुमान मंदिर, धुमनगंज, इलाहाबाद

मां का प्रेम कितना पवित्र होता है, ऐसा अन्यत्र किसी भी प्रेम में नहीं पाया जाता. ऐसे प्रेम के आगे दुनिया की सारी सम्पदा भी न्योछावर कर देना कम है. पुत्र का जीवन पर्यन्त किया गया सेवा-भाव उसका प्रतिकार नहीं कर सकता.

मां के दो रूप है इस भौतिक संसार में. पहली आपकी सास और दूसरी आपकी पत्नी की सास. लेकिन दोनों के दृष्टिकोण बेटी और बहू, दामाद और बेटा के लिए अलग-अलग होते हैं. आज के जीवन में असली फसाद के जड़ यही दृष्टिकोण है.

दाऊजी

आदाब अर्ज़ है

हमने रख दी, रक्त की अंतिम बूँद निचोड़।
तुम बस करते रह गये गुणा, भाग औ' जोड़।।

हमने सौंपा था उन्हें फूलों का संसार।
बदले में हमको मिला, काँटों का उपहार।।

सम्बंधों का अर्थ क्या, अगर नहीं है अर्थ।
अर्थ व्यर्थ है, आप यदि व्यय में नही समर्थ।।

कितनी झुकी विनम्रता सुबह, दोपहर, शाम।
उनके उत्तर के लिये तरसे बहुत प्रणाम।।

आमंत्रण था नेह का, आग्रह था सौ बार।
घर पहुँचे तो द्वार पर तनी दिखी तलवार।।

अधरों पर मुस्कान थी, हाथों में था हार।
लेकिन आँखों में नहीं दिखा बूँद भर प्यार।।

तन-मन, धन माटी हुए सांसत में है जान।
किन्तु अहम के फूल की पँखुरी हुई न क्लान।।

अश्वनी कुमार पाठक,
सिहोरा, जबलपुर, म.प्र.

भारतीय जनसंघ का उत्थान, पतन तथा वर्तमान में प्रासंगिकता!

भाजपा का जनसंघ नीतियों के बल पर ही कांग्रेस का विकल्प बनना संभव।

-पूनम राजपुरोहित 'मानवताधर्मी'
(लेखक भारतीय जनसंघ के पूर्व महासचिव एवं राष्ट्रीय प्रवक्ता, प्रखर राष्ट्रवादी विचारक-चिन्तक, सुप्रसिद्ध साहित्यकार -पत्रकार, समसामयिक समीक्षक-समालोचक, प्रख्यात गोभक्त-गोसेवक तथा जाने-माने समाजसेवी हैं।
०जनसंघ, जालोर, राजस्थान

21अक्टूबर का दिन ''भारतीय जनसंघ'' का स्थापना दिवस ही नहीं अपितु भारत की राजनीति में वैचारिक दृष्टि से लोकतान्त्रिक परम्पराओं युक्त दलगत राजनीति की नींव रखे जाने का दिन भी है. भारतीय जनता पार्टी 21 अक्टुबर 1951 को डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी, प्रो. बलराज मधोक जैसे महापुरूषों द्वारा स्थापित भारतीय जनसंघ की कोख की ही पैदाईश है. आज दुर्भाग्य से भाजपा की नीतियाँ और शीर्ष नेतृत्व सिद्धान्तिक एवं वैचारिक दिगभ्रमिता से संक्रमित होकर ''कांग्रेस की बी टीम'' बनकर रह गया है.

समय-समय पर भाजपा अपनी नीतिगत असफलताओं को छुपाने, कांग्रेस से भिन्न होने के दिखावे तथा राजनैतिक शुद्र हितों की पूर्ति हेतु भारतीय जनसंघ, डॉ.मुखर्जी, पं. उपाध्यायजी आदि के नाम का प्रयोग तो करती है परन्तु उन महान आदर्शों की मूल नीतियों से पूर्ण विमुखता लगातार बनाए हुए है. समय आ गया है कि ''जनसंघ स्थापना दिवस'' के दिन भाजपा अपने वैचारिक, सिद्धान्तिक एवं नीतिगत फिसलन के कटु सत्य का साक्षात्कार करते हुए आत्म अवलोकन के साथ देश को पुनः द्विदलीय वैचारिक राजनैतिक आधार देने की नींव रखने की दिशा में आगे बढ़ें.

6 अप्रैल 1980 को अपनी उत्पति के बाद भाजपा ने कई अपरिपक्व राजनैतिक 'बन्दर गुलैच्यियाँ' खाने के बाद अन्ततः जनसंघ की प्रखर राष्ट्रवाद एवं स्पष्ट हिन्दुत्व की नीतियों पर आकर ही जनसमर्थन प्राप्त कर 6 वर्ष तक केन्द्रीय सत्तासुख पाया. तद्पश्चात 'येन-केन-प्रकेरण' सत्ता में बने रहने के जुगाड़ में भाजपा ने अपना सब कुछ खो दिया. फलतः आज जनमानस कांग्रेस और भाजपा दोनों बड़े दलों में वैचारिक व सिद्धान्तिक अन्तर नहीं ढूँढ पा रही है और भाजपा के हाथों ठगा सा अनुभुत कर रही है. स्पष्ट है कि 'जातिगत एवं अल्पसंख्यक तुष्टिकरण' के राजनैतिक हथकंडों के विषय में आम जनता कांग्रेस - भाजपा को 'एक ही हांडी की खिचड़ी' मानने लगी है.

उपरोक्त स्थिति कांग्रेस के लिए सबसे बड़ा सबल और भाजपा की कमजोरी बन गयी है. दोनो दलों की एक जैसी गोलमोल नीतिगत छवि के कारण जनता के सामने असली खिचड़ी कांग्रेस को चुनना ही मजबूरी रह जाती है. आखिर नित नई राग अलापने वाली भाजपा को चुने तो क्यों चुने? भाजपा कर्णधारों को समझना होगा कि उनकी वास्तविक शक्ति भारतीय जनसंघ की जड़ों में ही है. इसके लिए जनसंघ की स्थापना से उसके पतन तथा भाजपा के गठन से उसकी वर्तमान स्थिति तक के सभी पहलुओं को खुले हृदय से स्वयं में झाँककर समझना होगा.

1947 में पं. नेहरू के नेतृत्व वाली मनोनीत केन्द्रीय सरकार में डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी उद्योग मन्त्री थे तथा वो लौहपुरूष सरदार बल्लभभाई पटेल के बाद तीसरे सबसे बड़े सर्वमान्य नेता एवं सत्ता के केन्द्र बिन्दु थे. उन्होंने प.नेहरू की कश्मीर मसले पर अव्यवहारिक, अदूरदर्शी एवं राष्ट्रघाती नीति और

अजातशत्रु पं० दीनदयाल उपाध्याय

पं० दीन दयाल उपाध्याय

अल्पसंख्यक तुष्टीकरण के विरोध में अप्रैल, 1950 में केन्द्रीय मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया. आज भी डा. मुखर्जी का यह कदम सिद्धान्तों के लिये सत्ता को ठोकर मारने का 'न भूतो ना भविष्यति' की भांति अनुकरणीय है.

मंत्रीमंडल से त्यागपत्र देकर डा. मुखर्जी ने विभाजन का मुख्य कारण बनी द्विराष्ट्र की नीति के विरुद्ध राष्ट्रवादी राजनीति की स्थापना हेतु पश्चिम बंगाल में 'इंडियन पीपुल्स पार्टी' का गठन किया. दूसरी तरफ जम्मू कश्मीर में 1947 से पं. नेहरू की आत्मघाती नीतियों के विरूद्ध 'जम्मू कश्मीर प्रजा परिषद' के संस्थापक पं. प्रेमनाथ डोगरा, प्रो. बलराज मधोक आदि आन्दोलनरत थे. 'पीपुल्स पार्टी' और 'जम्मू कश्मीर प्रजा परिषद' में वैचारिक समानता के कारण ही देश के राजनैतिक पटल पर हिन्दुत्वादी -राष्ट्रवादी के रूप में 'भारतीय जनसंघ' की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ.

21 अक्टूबर 1951 के दिन 'श्रीरघुमल कन्या पाठशाला, दिल्ली' में जनसंघ की स्थापना डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी, प्रो.बलराज मधोक, वैध गुरूदत्त, पं.मोलिन्द्रचन्द्र शर्मा एवं भाई महावीर द्वारा हुई, जिसमें लाला जौध राज का नैतिक व आर्थिक महत्वपूर्ण योगदान रहा. आगे चलकर एकात्म मानववाद के महान प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय, श्रीसुन्दर सिंह भण्डारी, श्रीकुशाभाऊ ठाकरे, नानाजी देशमुख इत्यादि नेताओं ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के निर्देश पर विभिन्न प्रदेशों में जनसंघ को खड़ा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

बहुत कम लोग जानते हैं कि भारतीय जनसंघ स्थापना में संघ परिवार की कोई प्रत्यक्ष भूमिका नहीं थी. संघ का जनसंघ को मजबूती देने में महत्ती योगदान अवश्य रहा. जनसंघ के संस्थापक डा.मुखर्जी संघ के नहीं हिन्दू महासभा के नेता रहे थे तथा प्रमुख सहसंस्थापक प्रो. मधोक संघ के कश्मीर प्रान्त प्रमुख रह चुके थे. महान संगठक पं. दीनदयाल उपाध्यायजी का डा.मुखर्जी से सीधा संपर्क 1952 में जनसंघ के पहले राष्ट्रीय अधिवेशन, कानपुर में हुआ. वहीं उन्हें राष्ट्रीय महामन्त्री बनाया गया परन्तु पं.उपाध्यायजी का जनसंघ केन्द्रीय राजनीति में पर्दापण 1953 में हुआ. भाजपा के शीर्ष नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी और श्रीलाल कृष्ण आडवाणी का जनसंघ की स्थापना के बाद तक डा.मुखर्जी से कोई सीधा संबंध तक नहीं था. ये नेतागण 1953–55 के मध्य डा. मुखर्जी की संदिग्ध मृत्यु 23 जून, 1953 के बाद जनसंघ में सक्रिय हुए.

1948 में महात्मा गांधी की

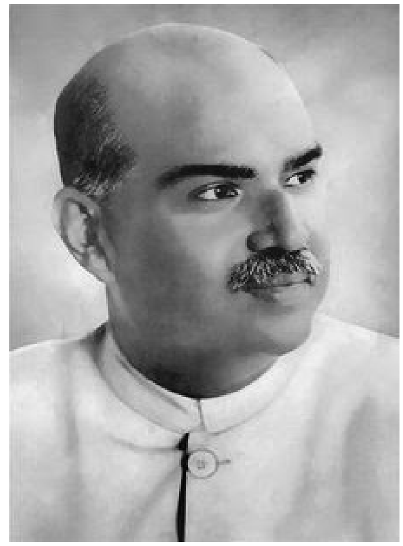

श्यामा प्रसाद मुखर्जी

हत्या में हिन्दू महासभा एवं संघ परिवार पर संलिप्तता के आरोपों से इन हिन्दूत्ववादी संगठनों पर प्रतिबन्ध की मार पड़ी. उन परिस्थितियों में डा. मुखर्जी जैसे देशव्यापी लोकप्रिय और अनुभवी नेता की अगुवाई में 'भारतीय जनसंघ' की उत्पति हुई. जो आगे चलकर छद्म धर्मनिरपेक्षवादी, जातिवादी और अल्पसंख्यक तुष्टीकरण जैसी देश की एकता एवं अखण्डता को चोट पहुंचाने वाली नीतियों और राजनैतिक एकाधिकारवादी बन चुके पं. नेहरू का वास्तविक वैचारिक विकल्प बना. तत्कालीन सभी राजनैतिक दल पं. नेहरू के पिछलग्गू मात्र थे और ऐसे में जनसंघ की स्थापना लोकतांन्त्रिक दलीय व्यवस्था के विकास के लिए भी ऐतिहासिक सिद्ध हुई.

जनसंघ ने 'राष्ट्रदेवो भवः' को आदर्श वाक्य के रूप में आत्मसात करते हुए भगवा ध्वज और दीपक चुनाव चिह्न को अपनाया. जनसंघ के सभी प्रमुख कर्ण धार राष्ट्रवादी तथा हिन्दुत्ववादी राजनीति को प्रतिबद्ध थे. जनसंघ के संविधान और प्रथम घोषणापत्र हिन्दुत्व व राष्ट्रवाद की आत्मा थी, जिसमें 'समान नागरिक

प्रो० बलराज मधोक के साथ अटल बिहारी वाजपेयी

संहिता लागू करने, धारा-370 को हटाने और हिन्दू राज्य' का संकल्प 'प्राणवायु' की तरह था।

डा.मुखर्जी के कुशल नेतृत्व में देश के पहले आम चुनाव 1952 में स्वयं मुखर्जी सहित तीन जनसंघ सांसद चुने गये और मत संख्या के आधार पर राष्ट्रीय दल का दर्जा मिला. पं.नेहरू नेशनल कांफ्रेंस के मुस्लिमवादी नेता शेख अब्दुल्ला के मोहपाश में बुरी तरह अंधे थे और कश्मीर समस्या को पेचीदा करते जा रहे थे. देश में डा.मुखर्जी के अलावा कोई अन्य व्यक्तित्व नहीं था, जो नेहरू-अब्दुल्ला की जोड़ी पर प्रभावी अंकुश लगा सके। 'एक देश एक विधान-नहीं चलेंगे दो निशान' के आन्दोलन में अपने अभिन्न साथी प्रो. मधोक एवं पं प्रेमनाथ डोगरा की अपील पर डा.मुखर्जी स्वयं कूदते हुए 'परमिट व्यवस्था' तोड़ने हेतु जम्मू-कश्मीर गये. जहां पूर्वनियोजित षडयंत्र के अन्तर्गत अब्दुल्ला सरकार ने पहले तो कश्मीर में प्रवेश होने दिया और फिर गिरफ्तार कर लिया. 23 जून, 1953 को देश के महान सपूत डा.मुखर्जी की श्रीनगर की जेल में संदिग्ध मृत्यु हो गई. डा.मुखर्जी की मौत मात्र एक नेता की मृत्यु नहीं होकर भारतीय जनसंघ के साथ-साथ राष्ट्रवादी-हिन्दुवादी राजनैतिक संभावनाओं की भी हत्या थी. डा० मुखर्जी की मृत्यु जनसंघ और राष्ट्रवादी तत्वों और भारतीय राजनीति के लिए अपूर्णीय क्षति थी। परन्तु प्रो.मधोक और पं. उपाध्याय एक शरीर के दो कंधों की भांति जनसंघ को आगे बढ़ाने लगे, जिससे डा० मुखर्जी की मृत्यु के साथ ही जनसंघ की समाप्ति तय समझ रहे दलों एवं नेताओं को घोर निराशा हाथ लगी.

1965 के अन्त तक प्रो.मधोक के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के साथ ही राष्ट्रवादी सोच भरे नेतृत्व ने जनसंघ को 1967 के आम चुनाव में सर्वोच्च शिखर पर पहुंचाया. उस समय जनसंघ गठजोड़ के पास संसद में सौ से ज्यादा सीटें थी. दिल्ली में कांग्रेस का सफाया हो गया, उत्तरप्रदेश, पंजाब में क्रमशः लोकदल और अकालियों के साथ जनसंघ की संयुक्त सरकारें बनी. मध्य प्रदेश व राजस्थान सहित देश के 8 प्रमुख राज्यों में जनसंघ मुख्य विपक्षी दल बना. राष्ट्रीय अध्यक्ष व महामन्त्री के रूप में क्रमशः प्रो मधोक और पं उपाध्याय अग्रिम राष्ट्रीय राजनेताओं के रुप स्थापित हो चुके थे।

यह प्रो.मधोक एवं पं.उपाध्याय की अपनी-अपनी सफल भूमिकाओं में भारतीय जनसंघ के चरमोत्कर्श पर पहुंचने का दौर था. संघ के द्वितीय सर संघचालक परम पूज्य श्रीमाधव सदाशिव गोलवलकर 'गुरूजी' का इन दोनों नेताओं को खुला आशीर्वाद व समर्थन मिला और संघ कार्यकर्ताओं ने जनसंघ को देशव्यापी मजबूती प्रदान करने में अपनी पुरी ताकत झोंक दी थी. संसद में प्रो.मधोक कांग्रेस के शीर्ष नेता पं. नेहरू पर भारी पड़ने लगे थे. सांप्रदायिक सौहार्द, पुर्तगालियों से गोवा मुक्ति, गौरक्षा आन्दोलन, श्रीराम जन्मभूमि, काशी एवं मथुरा के मन्दिरों के निर्माण जैसे राष्ट्रवादी-हिन्दूत्ववादी मुद्दों पर पं. नेहरू के उत्तराधिकारियों को पहली बार सुरक्षात्मक रुख अपनाना पड़ा था. उन दिनों प्रो.मधोक की भारतीयकरण की अवधारणा का भरतीय ही नहीं विश्व जनमानस पर भी अभूतपूर्व प्रभाव हुआ, जो आज भी प्रासंगिक है.

1971 के आम चुनाव के लिए मीडिया व राजनैतिक गलियारों में जनसंघ की प्रो.मधोक के नेतृत्व में केन्द्र में सरकार बनने के कयास लगाये जाने शुरु हो गये थे. परन्तु दुर्भाग्य से तब तक जनसंघ के भीतर एक अति-महत्वाकांक्षी नेताओं का गुट पनप चुका था. उन दिनों स्वास्थ्य कारणों से संघ पर गुरूजी का प्रभाव कमजोर होने लगा था तथा संघ के नये कर्णधार वैचारिक भटकाव की अवस्था में थे.

संघ परिवार जनसंघ पर सांगठनिक व सत्ता रूपी स्थूल नियन्त्रण के प्रयास को अधिक बल देने लगा था.

30 दिसम्बर 1968 को कालीघाट अधिवेशन में पं. उपाध्यायजी ने प्रो. मधोक से राष्ट्रीय अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया. जनसंघ के भीतर पनप चुके नेहरूवादी नेताओं का उपाध्यायजी के अध्यक्ष बनने का विरोध तथा बाद में असहयोग करना एक अप्रत्याशित घटना थी. महानतम द्रष्टा, विचारक - चिन्तक और अद्भूत संगठक पं. उपाध्यायजी की 11 फरवरी 1968 को मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर रहस्यमय मौत हो गई.

हिन्दुत्व एवं राष्ट्रवाद विरोधी ताकतों द्वारा डा. मुखर्जी की हत्या की तरह ही उपाध्यायजी की हत्या जनसंघ को दूसरी बार समाप्त करने का प्रयास था, जिसमें वो काफी हद तक सफल भी हो चुके थे. तद्पश्चात श्री अटल बिहारी वाजपेयी संघ के वरदहस्त से जनसंघ अध्यक्ष बने और हर दो वर्ष में अध्यक्ष बदलने वाली पार्टी में वो 1973 तक अध्यक्ष बने रहे. 1971 के चुनाव में जनसंघ 'अर्श से फर्श' पर आ चुका था, क्योंकि नये नेतृत्व के पास पूर्व के नेताओं जैसी स्पष्ट सोच, चरित्र एवं निष्ठा का नितान्त अभाव था.

1973 में कानपुर राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रो.मधोक ने तेजी से जनसंघ के पतन के कारणों और पुर्नः उत्थान के लिए जरूरी नीतियों को लेकर ऐतिहासिक उद्बोधन दिया. पितातुल्य अग्रज प्रो. मधोक का नेतृत्व की कमजोरियों की तरफ यह ध्यानकर्षण जनसंघ के हित में था परन्तु एक गुट ने प्रो.मधोक को सुनियोजित षडयंत्र के अन्तर्गत उद्बोधन को मीडिया को लिक करने का आरोप लगाते हुए 3 वर्ष के लिये उनकी अनुपस्थिति में निष्काषित कर दिया. सही में यह भारतीय जनसंघ की हत्या का तीसरा और सफल प्रयास सिद्ध हुआ. संघ ने अपने वास्तविक आदमी प्रो. मधोक की राजनैतिक हत्या करने में शामिल होकर श्री वाजपेयी को आगे लाकर हिन्दूत्ववादी-राष्ट्रवादी चेतना, जागृति एवं कांग्रेस का सशक्त राजैनतिक विकल्प बन चुके जनसंघ की युवाकाल में हत्या हेतु अंतिम कील ठोकी.

1974—75 तक भारतीय जनसंघ के तत्कालिक नेतृत्व की छवि और स्वीकार्यता जनमानस में अविश्वसनीय हो चुकी थी. स्व. इंदिरा गांधी इमरजेंसी लगाकर सभी विपक्षी दलों के नेताओं को लगभग 18 महीने तक मीसाबंदी के अर्न्तगत जेलों में डाल दिया. तेजी से बदलते घटनाचक्र में वैचारिक समानता और संकल्पों में गहरी भिन्नता के बावजूद सभी विपक्षी दलों ने एकजुट होकर 'जनता पार्टी' बनाई. यह एकता इमरजेंसी और श्रीमती गांधी के अत्याचारों से मुक्ति का प्रयास मात्र था, जिसमें कोई वैचारिक स्थायी बंधन नहीं था. 1977 के चुनाव में जनता पार्टी जीती, जिसमें जनसंघ घटक के सबसे ज्यादा लगभग 90 सदस्य थे. श्री वाजपेयी, आडवाणी और सिकन्दर बख्त प्रधानमंत्री श्री मोरारजी भाई देसाई मंत्रिमंडल में शामिल हुए. उसी दौरान देशघाती 'अल्पसंख्यक आयोग' की स्थापना श्री वाजपेयी के सहयोग और विशेष भूमिका से हुई. धारा-370 हटाने और समान नागरिक संहिता लागू करने के मुद्दों को नेपथ्य में धकेल दिया गया और गौहत्या प्रतिबन्ध की मांग को तो स्वंय वाजपेयी जी भी अव्यवहारिक कहने लगे थे।

वैचारिक अन्तःविरोधों और चौ. चरणसिंह की अति महत्वकांक्षा के चलते जनता पार्टी का ढाई वर्ष में ही पतन हो गया. सभी घटक दल अपने-अपने नाम व ध्वज के साथ पुनः सक्रिय हो गये परन्तु जनसंघ घटक के नेता श्री वाजपेयी-आडवाणी वैचारिक दुविधा में फंसे थे. तब तक जनसंघ के वरिष्ठतम नेता प्रो.बलराज मधोक ने 1978 में 'अल्पसंख्यक आयोग' के गठन के विरोध में जनता पार्टी से नाता तोड़ते हुए 'भारतीय जनसंघ' का पुर्नःगठन कर लिया था. उन्होंने जनसंघ घटक के सभी नेताओं से पुन जनसंघ संभालने की अपील करते हुए स्वयं अध्यक्ष पद से हटने की घोषणा की. डा. मुरली मनोहर जोशी, श्रीसुन्दरसिंह भण्डारी जैसे नेतागण जनसंघ को ही पुनः मजबुती देने के पक्षधर थे परन्तु श्री वाजपेयी-आडवाणी

की जोड़ी ने डा.मुखर्जी, पं.उपाध्याय, प्रो.मधोक और जनसंघ के नाम तथा हिन्दूत्वादी-राष्ट्रवादी नीतियों से पूरी तरह पल्ला झाड़कर समाजवाद व नेहरूवाद के बूते पर सत्ता प्राप्ति का तानाबाना तैयार किया.

6 अप्रैल 1980 को मुम्बई में श्री वाजपेयी के नेतृत्व में भाजपा की स्थापना में उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में जनसंघ को यमुना में डुबोने की घोषणा करते हुए अपने को असली जनता पार्टी बताया था. सम्मेलन में डा.मुखर्जी व पं.उपाध्यायजी के चित्र नदारद थे और डा.लोहिया एवं महात्मा गांधी के चित्र लगे थे. 1980 और 84 के आम चुनावों में भाजपा द्वारा अगला प्रधानमंत्री अटल बिहारी का नारा लगाया गया परन्तु क्रमशः 3 और 2 सीटें ही मिली. 1984 में स्वयं वाजपेयी ग्वालियर से हार गये. यह भाजपा व वाजपेयी का पतन का युग था, जिस कारण बागडोर श्री आडवाणी के हाथों में आयी. अब जाकर भाजपा को 'मरता क्या न करता' की तर्ज पर एक बार पूनः जनंसघ की याद आयी और श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण, धारा-370 हटाने, समान नागरिक संहिता लागू करने, बंगलादेशियों को देश निकाला, धर्मानान्तरण एवं गौहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध इत्यादि जनसंघ के परम्परागत मुद्‌दों पर आन्दोलन छेड़ा गया. जनता का अभूतपूर्व समर्थन मिला. 1987 में 1999 तक के चुनावों में भाजपा 2 से 182 सीटों पर पहुँचकर केन्द्र में 6 वर्षो तक सत्ता सुख प्राप्त किया.

भाजपा की उत्पति से लेकर अब तक के चरित्र, कार्यों और इतिहास का तथ्यात्मक एवं तर्कसंगत विवेचन किए जाने पर स्पष्ट होता है कि भाजपा का भारतीय जनसंघ से कोई वास्ता नहीं है और न ही उसकी डा. मुखर्जी व पं. उपाध्याय जी के सिद्धान्तों में आस्था है. भगवा की जगह दोरंगा झण्डा, जनसंघ की जगह भाजपा नाम, दीपक की जगह फूल चुनाव चिह्न आदि-आदि बदलाव के साथ पैदा हुई भाजपा गठबंधन राजनीति करते-करते वर्तमान में कांग्रेस की 'न्यू संस्करण' बनकर रह गई है. भाजपा चाहे अपनी सफलता के लाख दावे करें परन्तु उसके सभी नेता जानते हैं कि वो वैचारिक चौराहे पर खड़े हैं. इतिहास के अनुभवों से सभी राष्ट्रवादियों को और विशेषकर संघ परिवार व भाजपा को स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि देश की जनमानस को कांग्रेस के विकल्प के रूप में वर्तमान भाजपा की नहीं जनसंघ नीतियों की आवश्यकता एवं स्वीकार्यता है.

समय आ गया है कि भाजपा और संघ परिवार जनसंघ नीतियों की प्रांसगिकता और आवश्यकता को खुले तौर पर स्वीकार कर अपनाने की घोषणा करें. हाल ही में भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी, राष्ट्रवादी राजनीति के एकमात्र जीवित पितृपुरुष 92 वर्षीय प्रो.बलराज मधोक से मिलने उनके नई दिल्ली निवास पर पहुँचे थे. संभवतः आडवाणी का उदेद्‌श्य अपनी भूलों का प्रायश्चित करना ही रहा हो.

हिन्दी में सर्वाधिक अंक पाने वाले सम्मानित होंगे

प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को संस्थान २००६ से सम्मानित करता आ रहा है. इसमें छात्र/छात्राओं को अपने अंक पत्र, नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित कराकर ३० नवम्बर २०१२ तक नीचे लिखे कार्यालय के पते पर भेजें. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पाँच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/ विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में हिन्दी उदय सम्मान व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी.

हिन्दीतर भाषी राज्यों में स्नातक स्तर हिन्दी विषय वालो को छात्रवृत्ति

हिन्दीत्तर भाषी राज्यों में हिन्दी विषय लेकर स्नातक करने वाले छात्र/छात्राओं कों वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी।

अन्य जानकारी व प्रस्ताव के लिए निम्नलिखित पते पर लिखें:

सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी-१४४/६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.मो० 09335155949 **email:** sahityaseva@rediffmail.com

शिक्षा व साहित्य संस्कृति के संवाहक

-सुसंस्कृत व सभ्य होना मानवता की आवश्यकता है.

-सभ्यता वह चीज है जो हमारे पास है, संस्कृति वह गुण है जो हममें व्याप्त हैं.

-'संस्कृति' शब्द सम् और कृति से मिलकर बनता है. जिसका अर्थ मानव द्वारा सोच-समझकर किये गये कार्य.

-डॉ० संतोष गौड़ 'राष्ट्रप्रेमी'
जींद, हरियाणा

संस्कृति और सभ्यता दोनों घनिष्ठ सहेली हैं. सुसंस्कृत व सभ्य होना मानवता की अनिवार्य आवश्यकता है. जैविक दृष्टिकोण से मानव और पशु में कोई अन्तर नहीं होता. संस्कृति ही जैविक मानव को सुसंस्कृत मानव में परिवर्तित करती है. संस्कृति एक ऐसी चीज है जिसे लक्षणों से तो जान सकते हैं. किन्तु उसकी परिभाषा नहीं दे सकते.

कहा जाता है कि सभ्यता वह चीज है जो हमारे पास है, संस्कृति वह गुण है जो हममें व्याप्त है. घर, सड़क, पोशाक आदि संस्कृति नहीं, सभ्यता हैं. मगर पोशाक पहनने और भोजन करने में जो कला है वह संस्कृति की चीज हैं. हर सुसभ्य आदमी सुसंस्कृत ही होता है, ऐसा नहीं कहा जा सकता क्योंकि वेश-भूषा वाला आदमी अन्दर से नंगा हो सकता है और अन्दर से नंगा होना संस्कृति के अभाव को दर्शाता है. यह भी नहीं कहा जा सकता कि हर सुस्कृत आदमी सभ्य भी होता है, क्योंकि सभ्यता की पहचान सुख-सुविधा और ठाट-बाट है. मगर बहुत से ऐसे लोग जो गन्दी बस्तियों और झोपड़ो में रहते हैं, जिनके पास कपड़े भी नहीं होते और न कपड़े पहनने के अच्छे तरीके ही उन्हें मालूम होते है, लेकिन फिर भी उनमें विनम्रता, शिष्टाचार और सदाचार होता है, वे दूसरों के दुख से दुखी होते हैं तथा दुख को दूर करने के लिए वे खुद मुसीबत उठाने को भी तैयार रहते हैं.

'संस्कृति' शब्द का अर्थ अत्यन्त व्यापक है. मानव की बाह्य एवं आतंरिक स्थितियों के सुसंस्कृत व परिष्कृत समूह को 'संस्कृति' कहा गया है. शाब्दिक विश्लेषण करें तो 'संस्कृति' शब्द सम् और कृति से मिलकर बनता है. जिसका अर्थ मानव द्वारा सोच-समझकर किये गये कार्यो से लिया जाता है. इस प्रकार व्यापक अर्थ में संस्कृति में वह सब आता है जो मानव द्वारा निर्मित व विकसित है जैसे-भवन, बर्तन, परिवहन, रहन-सहन, भाषा, साहित्य, कौशल, कला, संगीत, नृत्य, धर्म, दर्शन, विश्वास और जीवन मूल्य आदि संस्कृति के कुछ घटक है, परन्तु विद्वान मनुष्य की सभी कृतियों को संस्कृति का अंग न मानकर लोकहितकारी कृतियों को ही संस्कृति मानते हैं.

संस्कृति को परिभाषित करना व इसकी तात्विक विवेचना करना सरल कार्य नहीं है. संस्कृति वास्तव में हाथी के समान हैं जिसे हम जैसे अंधे व्यक्ति खण्ड-खण्ड में जानने के प्रयत्न करते हैं. आपने छह अंधों और एक हाथी की कहानी सुनी होगी. यह भारतीय लोककथा तथ्यों और सच्चाई के बीच के फर्क को काफी अच्छे ढंग से उजागर करती हैं. छह अंधों में बहस छिड़ गई कि हाथी कैसा होता है? फिर उन्होंने इस बहस को खत्म करने के लिए स्वयं हाथी को छूकर तय करने का निश्चय किया कि हाथी कैसा होता है. एक अंधे ने हाथी के पेट को छुआ और कहा, 'हाथी दीवार की तरह है.' दूसरे ने उसके दांत को छुआ और कहा 'नहीं, यह तलवार की तरह है.' तीसरे ने उसकी सूढ़ को सहलाते हुए कहा, 'यह तो अजगर की तरह है.' चौथे ने पांव को छूआ और चिल्लाया 'नहीं, तुम पागल हो, यह तो पेड़ की तरह है. ' पांचवे के हाथ कान आया और उसने कहा, 'बेवकूफो! हाथी दीवार, तलवार, अजगर, पेड़, पंखे में से किसी भी तरह का न होकर यह तो एक रस्सी की तरह है.' इस प्रकार प्रत्येक अंधा अपने तथ्यों के आधार पर हाथी की अपनी-अपनी छवि पर अडिग था. संस्कृति भी हाथी की तरह है और इसे खण्ड-खण्ड में नहीं समग्रता से देखने की आवश्यकता है.

नेहरू जी के अनुसार, 'संस्कृति की कोई निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती, संस्कृति के लक्षण देखे जा सकते हैं. हर जाति अपनी संस्कृति को विशिष्ट मानती है. संस्कृति एक अनवरत मूल्यधारा है, यह जातियों के आत्म बोध से शुरू होती है और इस मुख्य धारा में संस्कृति की दूसरी **शेष पृष्ठ 14 पर**

क्रांतिकारी वीर उपेक्षित क्यों?

जिनकी बदौलत हम खुली हवा में सांस ले रहे हैं वही आज उपेक्षित हैं. उनका परिवार आज दर-दर की ठोकरें खा रहा है.

-डॉ० इक़बाल अहमद मंसूरी शास्त्री,
लखीमपुर खीरी, उ.प्र.

यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही है कि जिनकी बदौलत हम खुली हवा में सांस ले रहे हैं और अंग्रेजों की गुलामी से देश को मुक्ति मिली वही आज उपेक्षित हैं. उनका परिवार आज दर-दर की ठोकरें खा रहा है. सरकार उन वीर देश भक्त क्रांतिकारियों और उनके परिवार को उतना महत्व नहीं दे रही है जितना की देना चाहिए. उनको सम्मान देने के नाम पर उनकी देश भक्ति एवं देश सेवा के एवज में मात्र चन्द रूपये पेंशन के रूप में देती है, जबकि राजनीति करने वाले सांसदों विधायकों आदि को उनसे कई गुना पेंशन एवं सुविधाएँ दी जाती हैं. देश सेवा के लिए दिये जाने वाले तमाम ऐसे सम्मानों को ऐसे व्यक्तियों को दिये जाते हैं जो आजादी की जंग लड़ने वालों के मुकाबले उनका योगदान कुछ भी नही है. जबकि भारत के सर्वोच्च सम्मान के हकदार पहले वे ही हैं जिन्होंने कुर्बानियां दी.

अफ़सोस तो इस बात का है कि सरकार किसी भी क्रांतिकारी शहिद का जन्मदिन नहीं मनाती और न हीं उनके जन्म दिन या शहीदी दिवस पर छुट्टी ही घोषित है. उनके जन्म दिन या शहीदी दिवस पर सरकार द्वारा न तो किसी प्रकार की शोक सभा या श्रद्धाजंलि सभा ही आयोजित की जाती है. अलबता उनके बदौलत मिली आजादी की जश्न अवश्य मनाती है. सही मायने में तो आजादी की जंग लड़ने वाले वीर क्रांतिकारी ही सच्चे देश भक्त, देश के सच्चे सपूत और देशरत्न हैं. सर्वप्रथम उन्हें 'भारत रत्न' एवं 'परमवीर चक्र' से सुशोभित किया जाना चाहिए. परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने के बाद भी उन्हें देश का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' नही दिया गया. सवाल तो यह है कि क्या उनसे बढ़ कर कोई व्यक्ति देश भक्त ओर देश का सपूत है? क्या उनसे बढ़ कर किसी ने देश की सेवा की है? या देश के लिए त्याग किया है? यदि नहीं तो उन्हें यह सम्मान क्यों नही दिया गया?

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना घरबार छोड़ा, वतन का त्याग किया और तमाम झंझावातों से जुझते हुए विदेशों का भ्रमण कर विदेश में ही देश को आजाद कराने हेतु आजाद हिन्द फौज और आजाद हिन्द सरकार का गठन किया तथा विदेश में ही प्राण त्याग दिया, रानी झांसी रेजिमेंट की प्रथम कैप्टन डॉ० लक्ष्मी सहगल, शहिदे आज़म सरदार अमर शहिद भगत सिंह, राज गुरू, सुखदेव, बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, वीर सावरकर, चन्द्रशेखर आजाद, तात्या टोपे, नाना सहेब, रानी लक्ष्मीबाई, लाला लाजपत राय, खुदीराम बोस, ख्वाजा नजिमुद्दीन, दादा भाई नौरोजी, रास बिहारी बोस, उधम सिंह आदी अनगिनत स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हैं जिनकी बदौलत हम आज गुलामी से मुक्त हैं.

सरकार द्वारा इन महान देश भक्त स्वतंत्रता सेनानियों की उपेक्षा का उदाहरण इससे बढ़ कर क्या हो सकता है कि शहीदे आजम भगत सिंह के चाचा सरदार अजित सिंह को अंग्रेजी हुकुमत का बागी करार देते हुए अंग्रेजों ने उन्हें सजा के तौर पर रंगून में कालापानी की सजा दी. जब देश आजाद हुआ तो वे स्वदेश लौटे. स्वाधीनता दिवस समारोह में भारत सरकार द्वारा उन्हें नहीं बुलाया गया जिससे क्षुब्ध होकर वे डलहौजी चले गये और वहीं बस गये. शहीदे आजम भगत सिंह का पूरा परिवार ही आजादी का दीवाना था. उनके पिता सरदार किशन सिंह ने पंजाब में जट सिक्ख आन्दोलन चलाया था.

मै यह नहीं कहता कि देश का सर्वोच्च सम्मान किसी ऐसे योग्य व्यक्ति को न दिया जाये. बल्कि मेरा यह मानना है कि जिन्होंने देश को आजाद कराने हेतु अपना सर्वस्व त्याग किया उनके परिवार को उचित पेंशन व सुविधा दी जाय तथा मरणोपरान्त ही सही नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, शहिदे आज़म अमर शहिद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरू, सुखदेव, उधम सिंह, रासबिहारी बोस आदि स्वतंत्रा संग्राम सेनानियों को देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत किया जाय.

(लेखक भाग्य दर्पण के संपादक हैं)

व्यंग्य कथा

रंगीले चिरौंजीलाल

चिरौंजी लाल की मोटी सी नाक, आड़ी तिरछी आंखे, देखते हैं तो लगता है कि कहीं पे निगाहें और कहीं पे निशाना लगाए हैं. सिर कुछ छोटा व टेढ़ा होने के कारण उनका बचपन का नाम ही टेढ़े रख दिया गया था. दोस्त जब तब अभी भी इसी नाम से उन्हें बुलाते रहते हैं.

चिरौंजी भाई बड़े पहुंचे हुए और दिलफेंक इन्सान. एक दिन दफ्तर में उन्हें ज्यादा ही खुश पाकर पूंछ ही बैठा 'यार चिरौंजी आज बड़े फूले जा रहे हो, क्या भाभी से आप का टांका बैठ गया?'

चिरौंजी ने एक लिफाफा खोलकर लहराया और बोले, आज ही मिला है. किसी मिस मंजू का है. आज शाम पांच बजे मिलने को कहा है.

-**डॉ० सुरेश प्रकाश शुक्ल,** लखनऊ, उ.प्र.

हमारे सहयोगी चिरौजीलाल हम सब के लिए मुफ्त में मनोरंजन के भरे पूरे साधन है. ठिंगना सा कद जिसमें दो तिहाई हिस्से में तो पैर ही है. शेष एक तिहाई ऊपर के शरीर को भी कुदरत ने बड़ी मेहनत से बनाया होगा. मोटी सी नाक, आड़ी तिरछी आंखे, देखते हैं तो लगता है कि कहीं पे निगाहें और कहीं पे निशाना लगाए हैं. सिर कुछ छोटा व टेढ़ा होने के कारण उनका बचपन का नाम ही टेढ़े रख दिया गया था. दोस्त जब तब अभी भी इसी नाम से उन्हें बुलाते रहते हैं. खाने पीने में बड़े ही माहिर है सो माशा अल्लाह बड़ी अच्छी सेहत के मालिक हैं. उनके छोटे लेकिन काफी उभरे पेट पर से उनकी पैंट सरकती ही रहती है और वे उसे सरासर ऊपर खिसकाने के आदी हो चुके हैं. किसी का कितना ही मूड खराब क्यों न हो, उन्हें देखते ही बिलकुल फ्रेश नजर आने लगता है. कुछ लोग सिगरेट, पान, तम्बाकू के सेवन से भले सुकून महसूस करें लकिन अपने राम तो भाई चिरौजीलाल को देखकर ही फ्रेश हो पाते हैं. वैसे चिरौंजीलाल भले किसी को कभी कुछ खिलाते पिलाते न हों, भले लोग उन्हें कंजूस और मक्खीचूस कहें लेकिन मैं ऐसा बिलकुल नहीं मानता क्योंकि अक्सर शाम को मैं उन्हें गंज में घूमते फिरते देखता हूं. क्या शान होती है उस वक्त उनकी? अधपके बालों में सुगन्धित तेल, ध राऊ कपड़े और कैनवास जूतों में उनकी पर्सनालिटी पूरे शबाब पर होती है. ऊपर से कीमती सेंट की भरपूर खुशबू. वाह-वाह क्या कहने.

परन्तु उनकी घरवाली के नसीब में ही शायद खोट हैं. तभी तो बेचारी घरेलू खर्च चलाने के लिए भी झींकती रहती है. खाने और पहनने के लिए चिरौंजी भाई नाप तौल कर ही पैसे उन्हें देते हैं. चाहे वे बेचारी लाख झींके, मिन्नते करें या फिर दहाड़े लेकिन चिरौंजी भाई चिकने घड़े की तरह सब कुछ झेल जाते हैं और अपने ही रंग में रंगे रहते हैं. पत्नी ही क्या, नातेदार, पड़ोसी इक्के दुक्के दोस्त सहयोगी या कोई दूसरा कुछ भी कहता रहे, वे बिल्कुल बुरा नहीं मानते और हमेशा खुश या यूं कहें कि रंगीन नजर आते हैं. काफी समय तक तो मैं उनका बारीकी से अध्ययन करता रहा लेकिन चिरौंजीलाल भी किसी परमाणु रिएक्टर की तरह इतने संवेदनशील, पेचीदे निकले कि कुछ समझ में ही न आया तो मैंने धीरे-धीरे उनसे दोस्ती बढ़ा ली. उनसे बातें करके या यूं कहिए कि उनके साथ रहकर घर से दफ्तर तक समय बड़े आराम से कटने लगा था. अब मैं समझ गया था कि चिरौंजी भाई हैं बड़े पहुंचे हुए और दिलफेंक इन्सान. पता नहीं कब से किसी हसीना से इश्क लड़ाने के सपने मन में संजाए हुए थे और उसी हसीना की तलाश में ही शायद बन ठन कर गंज की सड़कों की नापजोख किया करते थे. एक दिन दफ्तर पहुंचा तो उन्हें कुछ ज्यादा ही खुश पाया तो पूछ ही बैठा 'यार चिरौंजी आज बड़े फूले जा रहे हो, क्या भाभी से आप का टांका बैठ गया?'

सुनकर उनके चुनौटी जैसे चेहरे का ढक्कन तिरछा हो गया. हाथ में एक लिफाफा लहराते बोले, 'अमां तुम भी यार हद करते हो. बीबी से जब आज तक टांका नहीं भिड़ पाया तो अब क्या...तो फिर? अमा बताओ भी कुछ तो जरूर है? अबकी उनके दांत नागफनी के कांटों की तरह बाहर को निकल आए, कहे बिना रह न पाए 'अमा कुछ न पूछो यार. समझ लो मेरी

वर्षो की तमन्ना पूरी होने को आई. लेकिन देखो ये मेरी निजी बात है, 'टाप सीक्रेट. किसी से कहना नहीं.

अरे चिरौंजी भाई तुम निश्चिंत रहो यार और कह डालो. शायद मैं भी कुछ नसीहत ले लूं.

हां, ये हुई न बात. अच्छा सुनो तुम्हें बताता हूं, अरे ये दफ्तर वाले पुरुष और ये नकचढी महिलायें मुझे जो समझें लेकिन इस शहर में मेरी भी कद्र करने वाले हैं. मेरा मतलब कद्र करने वाली हैं. ये देखो खुला ऑफर हैं.

आय, अमा क्या कहते हो यार चिरौंजी? अमा जल्दी आगे बताओ, यार माजरा क्या है?

चिरौंजी ने लिफाफा खोल कर फिर से लहराया और बोले, आज ही मिला है. किसी मिस मंजू का है. आय हाय, हाय रे जब नाम में ही इतनी कशिश है तो वो कैसी होगी? आज शाम पांच बजे मिलने को कहा है.

'लेकिन कहां पर बुलाया है?'

वाह बेटा, दाल भात में मूसलचन्द. तुम्हें क्यों बताऊं? यह सिर्फ मेरी और मंजू जी के बीच की बात है. देखो तुमने वाद किया है कि किसी से इस मामले में कुछ भी नहीं कहोगे वरना हमारी दोस्ती खत्म समझो.

अरे नहीं यार, मैं किसी से क्यों कहूंगा?

अच्छा तो अब मैं चलता हूं. तुम मेरे घर, कह देना, मैं कुछ देर से आ आऊंगा. हां.

और उन्होंने जेब से कंघी निकाल बालों में घुमाते और पीछे मुड़कर मुझे देखते दफ्तर के बाहर निकल गये. मेरे पेट में खलबली मचने लगी थी. सो कुछ देर बाद मैं भी उनके पीछे लग लिया. चिरौंजी भाई ने एक बड़ी दुकान से एक बड़ा सा डिब्बा साड़ियों से भरा हुआ खरीद डाला था और ग्लोब पार्क की ओर तेजी से बढ़ गये. मैं भी पहुंच कर एक झाड़ी के पीदे बैठ कर किसी हसीन दृश्य का इन्तजार करने लगा. तभी अपनी घड़ी बार-बार देखते हुए चिरौंजीलाल चौंक पड़े. 'आप समय के कितने पाबन्द हैं जी? एक मिनट भी लेट नहीं. मुझे ऐसे लोग ही पसंद है और आपके तो क्या कहने? जब से आप मिले हैं समझिए रातों की नींद हराम हो गई हैं.

'मंजू जी, आप इस तरह कहेंगी न तो मेरी सांस ही रूक जायेगी. सचमुच मुझे तो विश्वास हीं नहीं था कि आप जैसी खूबसूरत लड़की के मन में मेरे लिए इतना प्रेम उमड़ पड़ेगा.'

'ओ डार्लिंग, अब बस भी करो न.' कितनी अच्छी साड़ियां लाए हैं. वावौ. ..चार-चार साड़िया. सब मेरे लिए हैं? 'और नहीं तो क्या? सब तुम्हारे लिए. देखों कल तुम्हें एक और प्रजेनट दूंगा. देखना तुम खिल उठोगी. लेकिन तुम ये गुलाबी साड़ी कल पहनना.'

'ओ डार्लिग तुम कितने अच्छे हो. अच्छा डार्लिग अब चलना चाहिए. आज तो बड़ा मजा आया.'

अब मेरी समझ में आया कि चिरौंजी जी क्यों रंगीन हो चले थे. शाम को मुहल्ले के नुक्कड़ पर ही मुझे मिले. घर पहुंचे तो देखा मंजू बैठी उनकी पत्नी से सब कह रही थी. दोनों सहेलियां जो थी.

जीजाजी तुम्हें साड़ी लाकर नहीं देते थे न. लो ये चार साड़िया. क्यों जीजाजी? आगे से ध्यान रखियेगा.

चिरौंजी का चेहरा पीला पड़ गया था, क्योंकि अब उनकी पत्नी की बारी थी.

शिक्षा व साहित्य... पृष्ठ 11 का शेष...परधारायें मिलती जाती है. उनका समन्वय होता जाता हैं. इसलिये किसी जाति या देश की संस्कृति उसी मूल रूप में नहीं रहती बल्कि समन्वय से वह और अधिक सम्पन्न और व्यापक हो जाती है.

यथार्थ यही है कि संस्कृति की सर्वस्वीकृत व सार्वभौमिक परिभाषा है ही नहीं. विद्वानों के भिन्न-भिन्न विचार हमें इसको समझने में सहायता करते हैं. ओटावे के अनुसार 'किसी समाज की संस्कृति से अर्थ उस समाज की संपूर्ण जीवन शैली से होता है.' जान डीवी का कथन है 'संस्कृति मन की आदत या स्वभाव है जो सभी बातों का अनुमान लगाता है और उनका आकलन सामाजिक मूल्यों और लक्ष्यों के सन्दर्भ में करके उन्हें संचित करता है.'

व्यापक अर्थ में संस्कृति में शिक्षा, साहित्य, विज्ञान, उत्सव, खानपान, रहन-सहन, कला, अध्यात्म, मानवता, पर्यावरण, धर्म, वैश्वीकरण व राष्ट्रीयता, जीवन मूल्य आदि सभी कुछ सम्मिलित हैं. ये सभी संस्कृति से प्रभावित होते हैं और संस्कृति को प्रभावित करते हैं. राधा कमल मुखर्जी के अनुसार 'संस्कृति में समाज के सदस्यों के विश्वासों, व्यवहारों तथा मूल्यों का सम्पूर्ण योग होता है. उन संकेतों एवं चिह्नों का भी समस्त योग होता है, जिसके माध्यम से विश्वासो एवं मूल्यों की अभिव्यक्ति की जाती है.' संस्कृति व समाज में अविच्छिन्न संबंध है. संस्कृति मनुष्य को सामाजिक ज्ञान, विधि-विधान, नैतिकता, जीवन-मूल्यों, विविध प्रथाओं एवं क्षमताओं का बोध कराती है. धर्म व दर्शन संस्कृति को आधार प्रदान करते हैं तो साहित्य, संगीत, कला व शिक्षा संस्कृति के संवाहक ही नहीं परिमार्जक भी हैं.

विकलांगों के नाम समर्पित एक विलक्षण व्यक्तित्व

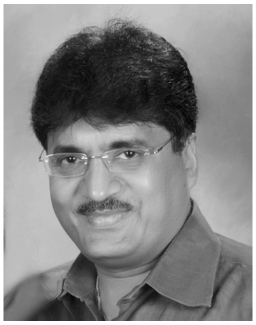

✍ ललित गर्ग

श्री देवेन्द्र राज मेहता का सम्पूर्ण जीवन विकलांगों के नाम रहा है. श्री मेहता ने प्रबल जिजीविषा एवं मानवीयता से सराबोर होकर अच्छाई का जो मुकाम हासिल किया है, वह एक विलक्षण उदाहरण है.

विकास ऊध्वारोहण की प्रक्रिया है. बीज उगता है तब बरगद बन विश्राम लेता है. दीये की बाती जलती है तब सबको उजाले बांटती है. समन्दर का पानी भाप बन ऊंचा उठता है तब बादल बन जमीं को तृप्त करने बरसता है. श्री देवेन्द्र राज मेहता का ऊध्वारोहण भी विकास की ऐसी ही प्रक्रिया से गुजरता है. उनका सम्पूर्ण जीवन विकलांगों के नाम समर्पित है, जयपुर फुट एवं मेहता एक दूसरे के पर्याय हैं. भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में वे विकलांगों के जीवन में रोशनी बनकर प्रस्तुत हुए हैं. इस समिति की हर गतिविधि, योजना एवं कार्यक्रम मानवीय संवेदनाओं की प्रयोगशाला में विभिन्न प्रशिक्षणों एवं प्रयोगों से गुजरकर विशिष्टता का वरन करती है, विकास के उच्च शिखरों पर आरूढ़ होती है और अपने पुरुषार्थ, परोपकार एवं सेवा-भावना से समाज एवं राष्ट्र के विकलांगों को ही नहीं बल्कि जन-जन को अभिप्रेरित करती है.

वॉरने बफेट ने कहा है कि पैसा, प्रसिद्धि और शक्ति हासिल करने से कई गुणा कठिन है अपनी अच्छाइयों को बनाए रखना. अच्छी बात यह है कि अच्छाई हासिल करना मुश्किल भले हो, लेकिन यह किसी अर्हता की मांग नहीं करती. श्री मेहता ने प्रबल जिजीविषा एवं मानवीयता से सराबोर होकर अच्छाई का जो मुकाम हासिल किया है, वह एक विलक्षण उदाहरण है. उनकी विरलता एवं विलक्षणता के और भी आयाम है, उन्होंने राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, अहिंसा-शांति और भाईचारा बढ़ाने की दिशा में काफी काम किया है. उनके इसी समर्पण भाव, सामाजिकता एवं परोपकार को देखते हुए ही उन्हें हाल ही में राजीव गांधी सद्भावना पुरस्कार दिया गया. यूं तो मेहता के कार्यों को देखते हुए वर्ष 2007 में उन्हें पद्मभूषण से भी सम्मानित किया गया था. महावीर विकलांग समिति द्वारा उपलब्ध कराया गया कृत्रिम अंग जयपुर फुट के नाम से प्रसिद्ध है. जयपुर फुट पहनकर विकलांग व्यक्ति पूरी तरह से सामान्य जीवन व्यतीत करता है- वह साइकिल चलाने के साथ वृक्षों पर भी काफी आराम से चढ़ सकता है. पहाड़ों की चढ़ाई हो या उबड़-खाबड़ रास्ते- विकलांगों को एक आम-आदमी की तरह जीने का अहसास कराने वाले श्री मेहता की सेवाएं उल्लेखनीय एवं अनुकरणीय हैं. मेहता विकलांगों में आत्मविश्वास का संचार कर उन्हें जिंदगी के पथ पर चलने को प्रेरित करते हैं।

महावीर विकलांग समिति द्वारा विकलांगों को कृत्रिम अंग निःशुल्क दिये जाते हैं. करीब 12 लाख से भी ज्यादा देश-विदेश के लोग अब तक इससे लाभान्वित हुए हैं। गतदिनों मुझे आसीन्द, राजस्थान में लगाये गये विकलांग सहायता शिविर में मेहता की कार्यप्रणाली एवं विकलांग सहायता की

नियोजित प्रकिया से रू-ब-रू होने का अवसर मिला. छोटे-से गांव में किस तरह डाक्टरों की टीम एवं विकलांग सहायता के उपकरण पहुंचे एवं विकलांग लोग उनसे लाभान्वित हुए देखकर आश्चर्यमिश्रित खुशी हुई. महावीर विकलांग समिति द्वारा जहां अपेक्षित हो मरीजों को तुरंत सेवा उपलब्ध कराई जाती है। जयपुर में महावीर विकलांग समिति के अस्पताल में किसी भी समय मरीज भर्ती हो सकते हैं. मेहता ने इस संस्था को पूरी तरह से गैर राजनीतिक बनाये रखा है. मेहता ने समाज-सेवा को विज्ञान से जोड़ते हुए स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय से महावीर विकलांग समिति को जोड़ा. इसके परिणामस्वरूप न्यू नी जॉइंट का विकास हुआ जो 'जयपुर नी' के नाम से प्रसिद्ध हुआ. टाइम पत्रिका ने भी वर्ष 2009 में इसे श्रेष्ठ 50 आविष्कारों में स्थान दिया. महावीर विकलांग समिति एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था है. इसके शिविर लैटिन अमेरिका, अफ्रीका आदि बड़े राष्ट्रों सहित पूरे विश्व के 26 देशों में लगाये जाते हैं. हाउ गुड पीपल मेक ऑफ च्वॉइसेस के लेखक रुशवर्थ कीडर कहते हैं कि इच्छा ही सबसे बड़ी योग्यता है. इतिहास में माइकल एंजलो, वॉन गॉग, महात्मा गांधी जैसे कई चरित्र हैं, जो अच्छे भी थे और सफल भी, साथ ही साथ परोपकारी भी. मशहूर लेखक और वक्ता स्कॉट बेकर्न कहते हैं कि ऐसा चरित्र बनिए, तो सोने पर सुहागा अन्यथा बस अच्छे इंसान बनिए. इससे आप ही नहीं, कायनात सुंदर हो जाएगी. लाखों लोगों की तरह मेहता भी इस सवाल को लेकर उलझन में रहे हो कि अच्छाई और सफलता का रिश्ता क्या है? दोनों में विरोधाभास हो, तो किसे महत्व देना चाहिए? मेहता ने अपने कार्यों एवं जीवन-दिशाओं से न केवल अपने अच्छे इंसान होने का उदाहरण प्रस्तुत किया है बल्कि सृष्टि को सुन्दरतम बनाने में भी योगदान दिया है.

मेहता के जीवन पर भगवान महावीर के जीवन और दर्शन का विशिष्ट प्रभाव है, वे जीवदया एवं पशु रक्षा कार्यकर्ता के रूप में भी जाने जाते हैं. पशु रक्षा के लिए भी उन्होंने कई काम किये हैं। कई पशुओं के घरों का निर्माण में सहयोग किया है. इसके अलावा पशुओं की सहायता से जुड़ी कई किताबों का भी प्रकाशन किया है. स्थान-स्थान पर गौशालाओं के निर्माण एवं संचालन में भी वे सहयोगी रहे हैं.

मेहता का जन्म राजस्थान के जोधपुर जिले में 25 जून 1937 को हुआ. उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय से आर्ट्स और लॉ में स्नातक की उपाधि ली है. इसके अलावा ब्रिटेन के रॉयल इंस्ट्रीटयूट से लोक प्रशासन की भी पढ़ाई की है. मेहता ने अमेरिका के बोस्टन स्थित अल्फ्रेड सोलन स्कूल ऑफ मैनेजमेंट एमआईटी में भी पढ़ाई की है. वे इसके बोर्ड के निदेशकों में भी शामिल हैं. अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद मेहता 1961 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में शामिल हुए. उन्होंने केन्द्र सरकार एवं राजस्थान सरकार के सर्वोच्च पदों पर रहकर जो कुशल प्रशासन के मानक गढ़े, उससे सुदीर्घ काल तक आने वाली पीढ़ियां प्रेरणा लेती रहेंगी. मेहता सेबी के अध्यक्ष भी रहे. भारत में आर्थिक सुधार की प्रक्रिया से भी मेहता जुड़े रहे. उन्होंने रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर का भी पदभार संभाला है. राजस्थान में अपने प्रशासनिक काल के दौरान मेहता ने गरीबों के लिए बने विशेष कार्यक्रमों में भी प्रमुख भूमिका निभाई. वे मुख्यमंत्री के सचिव भी रहे. कई प्रशासनिक पदों का निर्वहन करते हुए भी वे सामाजिक कार्यों में लगे रहे। सबसे बड़ी बात सफलता के उच्च शिखरों पर आरुढ़ होने पर भी उनमें सादगी, सरलता एवं निर्मलता ही देखने को मिलती है. वर्ष 1975 में जयपुर में उन्होंने महावीर विकलांग समिति की स्थापना की और इस समय मेहता पूरी तरह इससे जुड़े हुए हैं. मेहता के नेतृत्व में ही महावीर विकलांग समिति पूरे विश्व में विकलांगों की एक महत्वपूर्ण संस्था के रूप में उभरा है।

अनेकानेक विशेषताओं में मेहता की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वे सदा हंसमुख रहते हैं. वे अपने गहन अनुभव एवं व्यावहारिकता के कारण छोटी-छोटी घटना को गहराई प्रदत्त कर देते हैं. अपने आस-पास के वातावरण को ही इस विलक्षणता से अभिप्रेरित करते हैं। उनकी सहजता और सरलता में गोता लगाने से ज्ञात होता है कि वे गहरे मानवीय सरोकार से ओतप्रोत एक अल्हड़ व्यक्तित्व हैं. संसार और अपने परिवेश को देखने की उन्होंने बड़ी वेधक मानक दृष्टि विकसित कर ली है। वह जितनी संलग्न उतनी ही निस्संग और निर्वैयक्तिक है। यही मानक दृष्टि उनके व्यक्तित्व और कृतृत्व को समझने की कुंजी है.

ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट, 25 आई. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-92

पांच उत्सवों का पर्व–दीपावली

यह ज्योतिपर्व मंगलमय हो,
उमंगित उत्सति हो तन मन,
परिवार राष्ट्र सारी वसुधा,
जनगण का होवे आराधन्य।
ज्योतिपर्व के सुखद उजाले,
लाये रंग उमंगों वाले,
दीपक से बाती के रिश्ते,
पुण्य प्रेरणा देने वाले,
सुख–समृद्धि का साम्राज्य रहे,
कोई किसी का न हो मोहताज,
भूखा प्यासा ना सोये कोई,
हर दिल में हो खुशियों का राज,
जाति भेद का भाव हटा कर,
करें दूर राष्ट्र का अंधियारा,
छलका दे दिव्य प्रेम गंगा,
साक्षी हो पावन जग सारा।

भारत एक विशाल देश है. यहॉ की विभिन्न जातियॉ, समुदाय, भाषा–भाषी, विभिन्न धर्मो की मान्यता वाला देश है. इनके रीति–रिवाजों में थोड़ी बहुत विभिन्नतायें हो सकती है लेकिन मूल रूप से हिन्दू संस्कृति, एक–रूपता इनमें समाविष्ठ है, यहां अनेकता में एकता की मिसाल है. यहां कुछ पर्व ऐसे हैं जो सभी सम्प्रदाय व धर्म के लोग एक साथ मिलकर मनाते हैं, उनमें दीपावली का पर्व मुख्य है.

'असतो मा सद्गमय, तमसो मां ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृत गमय.'

हम असत्य से सत्य की ओर चले, अंधकार से प्रकाश की ओर चले, मृत्यु से अमृता की ओर चले, यही हमारी संस्कृति की वेद–वाणी है. हिन्दु संस्कृति प्रकाश की इच्छा रखने वाली है एवं अंधकार में विश्व को मार्ग दिखाने वाली है.

दीप जलाकर ज्ञान के दूर करो अंधकार, समता, करूणा स्नेह से भरो दिल के भण्डार.

अंधकार से प्रकाश का पर्व दिवाली एक नहीं बल्कि पांच दिनों का सामूहिक प्रकाश पर्व है, इसे महापर्व भी कहते हैं. कार्तिक कृष्णा 13 से शुरू होकर कार्तिक शुक्ला द्वितीय तक पर्व मनाये जाते हैं. ये पांचों पर्व जीवन में धन–धान्य, स्वास्थ्य, यश, आयु और उमंग को प्रदान करने वाले हैं.

प्रथम पर्व धनतेरसः धनतेरस यह देवताओं के वैद्य धन्वन्तरी के जन्म दिवस के रूप में मनाया जाता है. इसी दिन समुद्र मंथन के समय धनवन्तरी अपने हाथों में अमृत–कलश लेकर प्रकट हुये थे. धनवन्तरी के साथ–साथ धन के देवता कुबेरे व मृत्यु के देवता यमराज की भी पूजा की जाती है. ब्रह्मा जी ने कहा है कि इस दिन यमराज को दीप नैवेद्य समर्पित करने से अकाल मृत्यु नहीं होती है. इसी दिन सोना–चांदी के आभूषण, बर्तन व नये वाहन आदि खरीदने का शुभ–मुहुर्त होता है.

लहराती है उच्च पताका, धनवन्तरी भगवान की, आयुर्वेद प्रवर्तक जग में, भारत देश महान की.

द्वितीय पर्व नरक चतुर्दशी–इसको छोटी दीवाली व रूप चौदस भी कहते हैं. इसी दिन यमराज को दीप–दान किया जाता है. सायंकाल घर के बाहर, तुलसी के स्थान, पूजा घर, रसोई, मंदिर आदि पर भी दीप जलाये जाते हैं. कहते हैं कि भगवान शंकर ने कार्तिक कृष्णा चौदस को मंगलवार स्वाति नक्षत्र मेष लग्न में स्वयं ने माता अंजना के घर से अवतार लिया था जो

✍ **देवदत्त शर्मा दाधीच छोटी खाटू वाले,** जयपुर, राजस्थान
मो०: 9414251739

हनुमानजी के नाम से जाने जाते हैं. इसलिये इसी दिन हनुमान जयन्ती भी मनाते हैं. ये दिन नरकासुर राक्षस से भी सम्बन्ध रखता है. कहते हैं कि भगवान कृष्ण ने इसी दिन इसका वध किया था. स्त्रियां आटे के उबटन से पाटे के नीचे दीपक जला कर स्नान करती है. जिससे इनके रूप में निखार आता है. इसलिये इसको रूप चौदस भी कहते हैं.

तृतीय पर्व दीपावली–दीपमालिका का यह मुख्य पर्व है. यह अधिकांश कार्तिक की अमावस्या को मनाया जाता है. कभी–कभी काल गणना, नक्षत्र के आधार पर चौदस को भी पूजा होती है. जिस दिन सूर्यास्त के बाद एक घड़ी से अधिक अमावस्या रहे, उसी दिन दिपावली मनाते हैं. बंगाल में काली पूजा उत्सव मनाया जाता है. इस सम्बन्ध में कई घटनाएँ हैं. विभिन्न ग्रंथो में स्कंद पुराण, पद्म पुराण, भविष्य पुराण, ब्रह्म पुराण, रामायण, महाभारत आदि में दीपावली का वर्णन आता है. प्रथम भगवान राम का 14 वर्ष का बनवास व लंका विजय करके अयोध्या लौटने पर अवध के लोगों ने दीप जलाकर खुशियाँ मनाई. यह पर्व आसुरी शक्तियों पर विजय का प्रतीक है. वैदिक धर्म और संस्कृति को पुर्नप्रतिष्ठित करने वाली स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इसी दिन अपना शरीर छोड़ कर निर्वाण प्राप्त किया. सामाजिक, सांस्कृतिक जड़ता को छोड़कर धर्म की

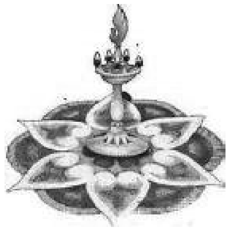

स्थापना करने वाले विराट व्यक्तित्व के धनी भगवान महावीर का निर्वाण दिवस भी इसी दिन है. हिन्दु-धर्म का शंखनाद करने वाली स्वामी रामतीर्थ ने भी इसी दिन जल-समाधी ली. सिख धर्म के छठे गुरू हर गोविन्द सिंह का ग्वालियर दुर्ग से रिहा होने पर भी यह पर्व मनाया जाता है. भगवान ने वामन रूप लेकर राजा बलि का गर्व भंग किया और बलि को पाताल लोक पहुंचा कर उसको वहां का राज्य दिया. बली ने वरदान मांगा कि वर्ष में एक दिन मैं प्रजा का दर्शन करूं. वह दिन भी दीपावली का था. सिख धर्म के चौथे गुरू रामदास ने इसी दिन स्वर्ण मंदिर की नींव रख कर वहां विशेष कार्यक्रम किया. देव-दानवों ने भी इसी दिन समुद्र मंथन किया. गुरू तेगबहादुर के परम मित्र भाई मणी सिंह को 1738 में दीपावली के दिन अमृतसर में बंदी बनाकर दिल्ली में मुगल शासकों ने मौत की सजा सुनाई. चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का राज्यभिषेक भी इसी दिन हुआ व भगवान कृष्ण नरकासुर राक्षस का वध करके 16100 राजकुमारियों को आजाद कराया. इस प्रकार इस दीपावली से कई घटनाएँ जुड़ी हुई है. लेकिन सभी महापुरुषों, अलग-अलग पंथों व धर्म के प्रवर्तक रहे होंगें. लेकिन सबका मूल उद्देश्य एक ही था कि 'भारतीय संस्कृति, हिन्दु धर्म को सनातन बनाये रखना तथा इस प्रवाह को गंगा की तरह अविरल रखना.' इसी दिन व्यवसायी लोग गणेश पूजन, सरस्वती पूजन व लक्ष्मी पूजन साथ-साथ करते हैं तथा बही-खाते, लेखनी-दवात का भी पूजन करते हैं. इसके पश्चात सभी मंदिरों में जाकर भगवान के दर्शन करते हैं व एक-दूसरे से मिलकर शुभ कामनाएं देते हैं. इसी दिन धूत-क्रीड़ा भी कुछ लोग करते हैं जो सामाजिक अभिशाप है इससे सभी को बचना चाहिए.

चतुर्थ दिन गोवर्धन पूजा व अन्नकुट महोत्सवः यह पर्व भगवान कृष्ण व गोवर्धन पर्वत को अर्पित है. कहते हैं कि इन्द्र की पूजा बन्द करने पर इन्द्र ने रूष्ट होकर गोकुल पर भारी वर्षा की तभी गोकुलवासियों की रक्षा हेतु भगवान कृष्ण ने अपनी अंगुली पर गोवर्धन पर्वत को धारण करके इन्द्र का अभिमान चूर किया. तभी से भगवान कृष्ण का गिरधारी व गोवर्धनधारी नाम पड़ा. इसी दिन प्रातःकाल स्त्रियां गाय-बैल के गोबर से गोवर्धन पर्वत बनाकर पुष्प, दूध-दही, मिष्ठान व दीपक से पूजा करती है. राजस्थान व अन्य प्रान्तों में सायंकाल को मंदिरों में अन्नकूट का भोग भी लगाते हैं, इसी दिन भगवान वामन के साथ-साथ असुरराज बली की भी पूज की जाती है.

पंचम दिन भैयादूज या यम द्वितीया- इसी दिन यमुनाजी यमराज को अपना भाई बनाया. कहते हैं कि इस दिन भाई-बहन मिलकर यमुनाजी में स्नान करके यमराज का पूजन करते हैं तो उनको यमराज का भय नहीं रहता हैं. यमराज उसी दिन अपनी बहन यमना के यहां भोजन करने जाते हैं. बहन कामना करती हैं कि भाई अपनी बहन की रक्षा का भार अपने ऊपर ले तथा भाई भी अपनी बहन की रक्षा का भार अपने ऊपर लेता हैं.

इस पावन पुनीत पर्व पर हम अन्तःकरण को प्रकाश से भर कर भारत माता को विश्व गुरू के पद पर पुनः प्रतिष्ठित करने की दिशा में कदम बढ़ावें तभी यह पर्व मनाना सार्थक होगा. मानव का अन्तःकरण प्रकाशोत्सव ही वास्तविक उत्सव है. यह उपनिषदों में ऋषियों ने कहा है कि इस दीपोत्सव पर सामूहिक प्रार्थना करके संकल्प करें कि सांस्कृतिक, सामाजिक व धार्मिक अभ्युदय में सहभागी बने व स्नेह, भाईचारे का दीपक जला कर हृदय को प्रकाशवान करें. तभी सच्चे अर्थो में दीपावली मनाना सार्थक होगा.

◆

दीप मालिका

प्रकृति की पूर्ण प्राणशक्ति ज्योति मालिका ये,
शस्य श्यामला की पहिचान दीप मालिका।
मानवीय संस्कृति की पुनीत अर्चना सी,
गो के वंश की है पूरी शान दीप मालिका।।
भारत के पुण्य-प्राण लोक-अभिराम राम,
युग के प्रमान की है आन दीप मालिका।
असत् पै सत्य की परम पूर्ण विजय सी,
वीरता की पूरी आन वान दीप मालिका।।
स्नेह व सौहार्द की सजीव सुरसरिता सी,
विश्व के बन्धुत्व की है शानी दीप मालिका।
धन धान्य श्री का वरदान देती है सभी को,
एकता की अमर निशानी दीपमालिका।
तन मन जीवन की म्लानता को हरती है,
पावनता की पूरी कहानी दीपमालिका।
सत्य शील संयम व मोद मङ्गल की मूल,
पर्व उत्सवों की महारानी दीपमालिका।

✍ **लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर'**, छतरपुर, म.प्र.

सुरक्षा की दृष्टी में नारी

✍संतोष शर्मा 'शान'
विधाःकहानी, कविता, गीत, ग़ज़ल एवं आलेख
रूचिःसाहित्य लेखन व पठन, संगीत व बैडमिंटन
सम्पर्कः ग्राम-सूरतपुर, पो० मैंडू, हाथरसा, उ.प्र.

नारी सशक्तीकरण घोषित इस भारत में नारी की सुरक्षा एंव सम्मान के दावों-वादों के बावजूद आज भी ऐसे कई सवाल उठते है जिसे देख सुन कर तो यही लगता है की विकास की ओर निरंतर अग्रसर होते देश में आज भी नारी शोषण का शिकार होने के साथ ही मानों भोग्या बन कर रह गई है. ऊपरी तौर पर तो नारी सबसे आगे निकल चुकी है नाम और शोहरत से स्वयं के साथ साथ परिवार समाज और राष्ट्र का गौरव बढ़ा रही है परन्तु यदि स्वतंत्र भारत को अन्दर से टटोला जाय जहाँ गरीबी और पिछड़ापन कई औरतों (परिवारों) को क्रूर पंजों में जकड़े हैं...तो...आँखें शर्म से झुक जाती है, क्योंकि वहाँ औरतें केवल पेट भरने के लिए सुबह से शाम तक पूरी मेहनत करती है लेकिन फिर भी वेतन की ...पूरे परिवार का भोजन आधा. ..अतः कई औरते देह व्यापार में जाने को विवश हो जाती है. मात्र पेट की आग को शान्त करने के लिए अपना देह वेश्यालयों तक की चौखट पार करने से कितनी नारकीय स्थिति में है ये तो वहीं जानतीं है जो ऐसी विवशता के अधीन हैं.

इसका कारण गरीबी और भ्रष्टाचार है. तो क्या इसका समाधान इतना घृणात्मक और अपराधपूर्ण होना चाहिए? फिर ये अपराध केवल नारी तो नही करती!... इसमें पूरा सहयोग उनका भी तो होता है जो इन विवश औरतों की विवशता का भरपूर लाभ और आनंद उठाने में कतई नही सकुचाते. फिर... केवल नारी ही क्यों? आज नवरात्री का पर्व जोरों पर है. इसी नारी शक्ति से ही जुड़ा है.

क्या इस बात से इन्कार किया जा सकता है कि इन दिनों एक ओर मंदिरों में देवी के नौ रूपों के सामने और कन्याओं के पूजन को समाचार पत्रों, टीवी चैनलों में चित्र सहित देखते व सुनते है. वही दूसरी ओर इन्ही समाचार पत्रों व चैनलों में किसी नाबालिग कन्या, किशोरी अथवा महिला के साथ अभ्रद व्यवहार, कूकर्म, बलात्कार जैसे दुष्कर्म आदि भी पढ़ने व देखने को मिल जाते है.

एक ओर लगी होती है माता, देवी और कन्या दर्शनों की लाईन तो दूसरी ओर देश के किसी ना किसी शव विच्छेदन गृह में बलात्कार के बाद की गई हत्या अथवा सामूहिक बलात्कार की पीड़ा से मृत किसी शव के पोस्टमार्टम के रिपोर्ट आने की प्रतिक्षा की लाईन.

जिस भारतीय संस्कृति की भावना 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः' रहती हो ऐसी आस्था वाले भारत में फिर देवी स्वरूपा कन्या व महिलाओं को वस्त्र विहिन क्यूँ....ममता रूपी नारी व क्षमा-करूणा की देवी का इस प्रकार अपमान क्यूँ? और सुरक्षा की बात करें तो सैकड़ों नियम, कानून और कड़े प्रतिबंध के बावजूद अभी भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नारी के ही सूक्ष्म रूप को नष्ट किया जा रहा है. जी हाँ भुण हत्या...अजीब विडम्बना है. अब ऐसे में नारी को सुरक्षा व सम्मान मिल रहा है. कहना क्या हास्यास्पद नही लगता?

जब नारी रूप को जन्म से पहले ही कुचल दिया जायेगा, यौवन की दहलीज पर कदम रखते ही मसल दिया जायेगा तो क्या नारी सुरक्षा और क्या नारी सम्मान? जबकी आज नारी हर रिश्ते को अपने हर कर्तव्य को बखूबी निभा रही है चाहे एक गृहणी हो अथवा बाहर कामकाजी.

जिस देश की नारी मान प्रतिष्ठा की ओर हर क्षेत्र में अग्रसर हो उसी देश की नारी लाखों की संख्या में छेड़खानी, बलात्कार, यौन उत्पीड़न एंव अभद्रता जैसे शोषण का शिकार हो रही है. उस देश में नारी का उद्धार हो रहा है यह कहना कहाँ तक उचित होगा. भारत के कई स्थानों पर तो हमारे योग्य पत्रकार बन्धुओं ने ऐसी खोज परक जानकारी हासिल की है जो एक सभ्य व आदर्श प्रिय भारतीय नागरिक का दिल दहला देगी. क्योंकि उनके रिपोर्ट के अनुसार कुछ अंचलों में औरतों का पैसा कमाना उनकी अर्थिक तंगी व मजबूरी है. इसके लिए वे पूरजोर श्रम करती है. बावजूद इसके वे दो जून की रोटी नहीं जुटा पाती और उन्ही काम देने वाले ठेकेदारों को अपना देंह सौपती है और वे

ठेकेदार उन्ही की मजदूरी से काटे पैसे उन्ही को उनकी देह की एवज में दे कर पल्ला झाड़ लेते है. आखिर क्यूँ? क्या समाज के ऐसे ठेकेदार क्षमा के योग्य है? क्या कुछ ही ठेकेदार और कुनियत प्रवृति के लोग पूरे समाज को शर्मसार नही करते...? आज गिने चुनों के छोड़ कर फिल्म, सीरियल एवं विज्ञापनों में नारी के एक एक अंग का प्रत्यक्ष प्रदर्शन इस प्रकार किया जाता है मानों वह केवल मनोरंजन का साधन मात्र हो. भले ही दर्शक इसे पसंद करें अथवा नहीं. चौराहों और फुटपाथों की दिवारों पर सीधे नग्न चित्र अथवा अधनंगे विज्ञापन तो इस कद चिपकाये जाते है मानों वह कोई स्वादिष्ट व्यंजन हो, जो कामूक लोगों की खरीद से तो दूर लेकिन भूखी नजरों के अवश्य करीब होते है. विज्ञापनों व फिल्मों में कुछ ऐसे भी सीन होते है जिनमें की नारी का कोई भी कार्य या औचित्य नही होता, फिर भी नारी का अर्धनग्न चित्र उसमें जोड़ दिया जाता है और कुछ युवतियाँ पैसों के लिए बाध्य हो कर इस तरह के फिल्मो व विज्ञापनों से ना तो झिझक महसूस करती है ना ही परहेज. इस बदलते युग में शादी विवाह भी जैसे एक व्यवसाय-सा बन गया है. जिस नारी सम्मान से अलग नही कहा जा सकता. बिना लेन-देन विवाह करने की बात पर तो कुछ अंहकारी पुरूष वर्ग को साँप सूंघ जाता है. क्योंकि उनकी ऊँची नाक का प्रश्न जो उठता है. क्या एक शिक्षित कन्या दहेज से कम है. यदि दुल्हन ही दहेज है तो दहेज क्या है? और यदि दहेज नही है तो फिर इसकी पूर्ति ना होने पर दुल्हन को उत्पीड़ित करना कैसा सम्मान? जब दहेज के कारण नारी की बलि चढ़ ही गई तो कैसी नारी की सुरक्षा व कैसा नारी का सम्मान. जब हम नारी सम्मान की बात कर ही रहे है तो विवाह में उच्चशिक्षा प्राप्त कन्या के साथ दहेज की माँग करना तो सरासार नारी का अपमान ही हुआ और जब नारी सुरक्षा की बात है तो दहेज में माँगी गई वस्तु की आपूर्ति ना होने अथवा निधारित समय पर ना दिये जाने पर अमानवीय व्यवहार कैसी सुरक्षा? माना कि आज तो नारी सबसे सर्वोच्च स्थान तक पहुँच चुकी है. हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा चुकी है. सच है, भी परन्तु एक सच यह भी है की इस सफलता का परचम लहराना उनके लिए आसान नही होता. हर एक राह में कैसी-कैसी परिस्थितियों कैसे-कैसे लोगों के सामने से उन्हें गुजरना पड़ता है. इस तरफ तो शायद ही किसी का ध्यान जाता हो ऐसी स्थिति में आज भी कुछ तो बदनामी और कुछ हालात से समझौता कर आगे बढ़ने से रह जाती है और कुछ परिवार अपनी योग्य बेटियों और उनकी कुछ कर पाने की लालस को भी दबा देने पर मजबूर हो जाते है. परिणाम यह होता है की वे अपनी योग्यता को चार दिवारी में कैद पाकर कुढ़-कुढ़ कर जीने पर विवश हो जाती है. अतः माँ की कोख से लेकर जन्म और विवाहोपरान्त चार दिवारी कब कहाँ व कैसे कहा जाय कि नारी पूर्णतः सुरक्षित व सम्मानित है. आज का नवरात्रि पर्व के विषय में एक कथा प्रचलित है की जब बहुत सारे दुष्ट दैत्य व असुरों का अत्याचार फैला, नारी शक्ति तभी प्रकट हो कर उनका संहार किया. सत्य यह की दुष्टों के संहार के लिए ही शक्ति का अवतार हुआ. इसी तरह आज भी भ्रष्टाचारी दुष्ट देहेजासुर जैसे दैत्य और कामुक असूर अपना मुँह बाये हमारे चारों तरफ खड़े है. क्या हमारा कर्तव्य नही कि हम सब मिलकर इनका विनाश करें? क्योंकि इनको समाज में बने महत्वपूर्ण दिवस समाप्त नही कर सकते. बल्कि स्वयं हम सबको मिलकर समाप्त करना होगा, और यह तभी होगा जब हर मानव मन की आँखों में नारी को सम्मान मिले. देश के हर नागरिक को नारी के प्रति सम्मान का आदर का दायित्वबोध हो. स्वयं नारी जाति मिल कर अंग प्रदर्शन तथा जिस्मफरोशी की प्रेरणा व बाध्यता पर कड़ा प्रतिबंध लगाये. जिस देश में ऐसे कुरीत के चलते नारी को फलने-फूलने, पलने बढ़नें से पूर्व ही समाप्त कर दिया जाता हो, उस देश का फलना फूलना व आगे बढ़ना क्या संभव होगा? जो समाज नारी के अस्तित्व को ही समाप्त करने, उसे मिटाने पर तुला है क्या वह धीरे-धीरे स्वयं समाप्त नही हो रहा. आज विकास के युग में नारी के समाज में बिगड़ते स्वरूप को मिलकर संवारना होगा. उसकी सुरक्षा उसके सम्मान व स्थान को सही रूप सही दिशा प्रदान करना होगा. क्योंकि देश की प्रगति उन्नति अथवा उज्ज्वल भविष्य को नष्ट होने से बचाने के लिए नारी के अस्तिव का सुरक्षित होना आवश्यक ही नही अनिवार्य भी है.

सभी पाठको को दीप पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

संपादक

कहानी

आम के पेड़ में बबूल के काँटे कैसे उगे

✍ डॉ० तारा सिंह, मुंबई

गांव के छोर पर पोखर के किनारे, मंदिर में चाचाजी को अर्घ्य का दीपक जलाता देख, मैं कुछ आश्चर्यचकित हो गई. क्या बात है, चाचाजी और पूजा! इनको तो दूर-दूर तक पूजा-पाठ से मतलब नहीं था. उनका तो बस अपने तीन बच्चों को नहलाना-धुलाना और खिलाना, यही इनकी पूजा थी और यही इनके जीने का मकसद भी था. दुनिया में एक ही काम था ऐसा जिसे चाचाजी दिल और निष्ठा से निभाते थे. वरना आंगन में तुलसी का पौध मुरझा ही क्यों न जाये, इन्हें मैंने कभी पानी तक डालते नहीं देखा था. मैं मन ही मन सोचती अवश्य थी कि काश! चाचाजी कुछ पूजा, अर्चना में भी समय लगाते, तो अच्छा होता.

ये तीन बच्चे, चाचाजी के अपने नहीं थे बल्कि ये उनकी स्वर्गवासी भाभी के थे जो मरते वक्त चाचाजी को सौंप गई थी; यह कहते हुए, मैं कुरूप हूं, काली हूं; इसलिए तुम्हारे भैया ने मुझे कभी पति का प्यार नहीं दिया. ये बच्चे चूंकि मेरे पेट से जन्म लिए हैं, इसलिए इन्हें भी उन्होंने पिता का प्यार नहीं दिया. सदा इनसे नफरत करते रहे. एक तुम्हीं थे जो मेरा और मेरे बच्चों का ख्याल रखा. कभी किसी चीज के लिए विलखने नहीं दिया इसलिए आज मुझे मरने का कोई ग़म नहीं हो रहा. मैं जानती हूं, मेरे मरने के बाद तुम मेरे बच्चों से और ज्यादा प्यार करोगें क्योंकि तुम बड़े ही दयालु हो. बच्चे अनाथ हैं, सोचकर तुम और अधिक इनसे जुड़ोगे. लेकिन गोविन्द! क्या, जब तुम्हारी शादी हो जायेगी, तुम्हारे अपने बच्चें होंगे, तब भी क्या तुम मेरे बच्चों से इतना ही प्यार करोगे. चाचाजी ने अपनी भाभी का चरण पकड़कर रोते हुए कहा था, 'भाभी! ये तीनों बच्चे मेरे पहले औलाद हैं और मेरे खुद के औलाद का स्थान दूसरा होगा. आगे चलकर हुआ भी ऐसा ही. चाचाजी की शादी हुई, चार बच्चे अपने हुए. मगर सिर्फ कहने के, उनकी आंखें, उनका प्राण, उनके तीनों काल, भाभी के बच्चे थे जिन्हें वे अपने हाथों नहलाना-धुलाना करते थे. पड़ोस के बाबाजी से चाचाजी को मैंने यहां तक कहते सुना था, 'हमारे बच्चों के मां-बाप दोनों हैं, लेकिन इन तीनों को देखिए, न मां है, न बाप ही. इसलिए मां-बाप, दोनों का प्यार, मैं इन्हें देने का भरसक प्रयास करता हूं. दुख होता है कि भैया, जिनके ये खुद के बच्चे हैं, वे कभी इनकी ओर ताकते तक नहीं. बाबाजी ने कहा, 'तुमको नहीं मालूम, तुम्हारे भैया लड़की देखकर शादी के लिए तय भी कर चुके हैं, शीघ्र ही उनकी शादी है.' सुनकार चाचाजी फूट-फूटकर रोये थे. उन्होंने तभी प्रतिज्ञा लिए थे कि जितना प्यार वे लोग अपने बच्चों को देंगे, उससे चार गुणा प्यार मैं इन बच्चों को दूंगा. चाचाजी के बड़े भाई सचमुच एक दिन शादी कर नई दुल्हन घर ले आये. साल समय के बाद उन्हें भी चार बच्चे हुए. लेकिन चाचाजी कभी उन्हें अपना भतीजा नहीं माने. धीरे-धीरे चाचाजी के सातो बच्चे बड़े हुए, स्कूल भी जाने लगे. गांव के स्कूल में ही सबों को दाखिला करवा दिये. दिन भर तो चाचाजी घर के बाहर खेत में काम से व्यस्त रहा करते थे, लेकिन शाम ढलने के पहले (अर्थात स्कूल खत्म होने के ठीक पहले) वे घर लौट आते थे. चाचाजी मन ही मन शायद यह सोचा करते थे कि मेरी पत्नी अपने बच्चों को ज्यादा और भाभी के बच्चों से कम प्यार करती है. मेरे घर पर रहने से ऐसा नहीं करेगी. यहां तक कि एक दिन चाची से मैंने कहते सुना था, 'भाग्यवान! जागेश्वर (भाभी के तीन बच्चों में सबसे बड़ा) लड़का है, स्कूल जाने लगा है, और सातों बच्चों में सबसे बड़ा भी है; अतः इसका ख्याल अलग से रखा करो. इसे दूध की कमी नहीं होने दो. दूध पीयेगा, तो मजबूत रहेगा, स्वस्थ रहेगा और शरीर स्वस्थ रहेगा, तभी पढ़ाई में भी अच्छा करेगा.' सुनकर चाची ने कहा, 'वो तो ठीक है, मगर गाय आजकल बहुत कम दूध तो सातों बच्चों में एक ही बार में खत्म हो जाता है. सुनते ही चाचाजी भड़क उठे, बोले 'उसमें क्या है, थोड़ा सा दूध पहले ही लोटा में अलग कर सींके कर छुपाकर रख दिया करो. इससे होगा कि जागेश्वर को दो बार दूध पीने को मिल जाया करेगा. बाद में चाची, ठीक वैसा ही करने लगी.

कुछ साल और बीता, धीरे-धीरे दोनों दीदी (जागेश्वर भैया की बहन) बड़ी होने लगी. अब चाचाजी की चिंता उनकी शादी को लकर बढ़ने लगी थी. जिस किसी से मिलते, उनसे एक बात कहना नहीं भूलते, 'आपकी नजर में कोई अच्छा घर-वर मिले, बताइयेगा. सावित्री अब बड़ी हो रही है, सोचता हूं, उसके हाथ पीले कर दूं. इसके लिए खर्च जो भी आयेगा, मैं करूंगा. जमीन-जायदाद बेच दूंगा. लेकिन इस अनाथ को, मैं सुखी घर में भेजूंगा.

आगे चलकर उन्होंने किया भी वैसा ही. दूर एक गांव में घर का अमीर, नौकरी वाला लड़का मिला और चाचाजी ने खेती-बारी बेचकर लड़के वालों की मांग पूरी की. अपने दोनों चहेती बेटियों को दूर के गांव के खाते-पीते परिवार में शादी कर विदा कर दिये. खेती की जमीन बेचकर शादी देने के पक्ष में चाची नहीं थी. यहां तक कि गांव वालों ने भी चाचाजी को समझाया था, 'खेती की जमीन बेच दोगे, तो बाकी बच्चे क्या खायेंगे? तुम दोनों पति-पत्नी बूढ़े हो चले, क्या खाओगे? कैसे जीओगे? लेकिन चाचाजी ने एक न सूनी, कहा 'जागेश्वर, पढ़ने में तेज है, दो-एक साल में नौकरी में चला जायेगा. धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा. ' दो साल बाद भैया की नौकरी लग गई, इन्सपेक्टर हो गए. चाचाजी ने एक सुंदर, सुशील लड़की देखकर भैया की शादी कर दी. पास-पड़ोस के लोग शादी देने से मना किये थे. कहे थे, 'अभी-अभी तो जागेश्वर नौकरी में गया है. कुछ पैसे घर आ जाने दो, तब शादी देना, क्योंकि शादी के बाद अधिकतर लोग बदल जाते हैं. तुम तो चाचा हो, लोग तो मां-बाप को पहचानना छोड़ देते हैं.' तब चाचाजी क्रोधित हो उठे थे और चिल्लाते हुए कहे थे, 'आप सभी इस अनाथ के दुश्मन है और मेरे भी. मैं इसका चाचा नहीं, मैंने इसे अपना बेटा मानकर पाला-पोषा है. और रोते हुए, अपनी भाभी के तस्वीर के सामने खड़े होकर कहा था, भाभी! देखो, ये लोग क्या बातें कर रहे हैं 'तब चाची ने उन्हें समझा-बुझाकर चुप कराया था.

भैया की शादी हुई. साल भी नहीं गुजरा, चाचाजी की तबियत ऐसी बिगड़ी, फिर संभलने का नाम ही नहीं लिया. चाची तो पहले से ही दम्मे की मरीज थी. सो अचानक सब कुछ छोड़कर चल दी. इधर चाचाजी की तबियत थी कि ठीक होने का नाम ही नहीं ले रही थी. एक दिन आखिर भाभी ने भैया से कहा, 'देखो, ये तुम्हारे चाचा है, तुम इनकी सेवा करो. एक दो दिन का हो तो ठीक है, ये तो बारहों मास बीमार रहते हैं. अब इनकी सेवा करना मेरे लिए संभव नहीं होगा. पहले तो भैया ने भाभी को, काफी समझाया, बुझाया. मगर छह महीने बाद ही वे भी उब गये. कहने लगे, 'महीने की आधी तनख्वाह, चाचाजी के इलाज में चला जाता है, भला ऐसे में कैसे चलेगा. इनके चार-चार बच्चों को भी ढोना पड़ता है. वे लोग तो कुछ करते नहीं, केवल तीन वेला रोटियां तोड़ते हैं. बस क्या था, वसूल के पक्के और जिद्दी चाचाजी पहले से तो थे ही, आज तो क्रोधित भी थे. सो उसी रोज अपना घर त्याग कर मंदिर में आ गए. तब से मंदिर ही अब इनका घर है, पूजा-पाठ, अर्ध्य का दीपक, यही इनकी संपत्ति है. चाचाजी से इस दर्द भरी दास्तान को सुनकर मेरी आंखें भर आई. कलेजा फट गया. दिल कह उठा, 'चाचाजी! आपने तो आम के पेड़ लगाये थे, ये बबूल के कैसे उग आये?'

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

१. प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
२. बिक्री की व्यवस्था
३. प्रचार—प्रसार की व्यवस्था
४. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी—93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद—211011 **bs&esy%** sahityaseva@rediffmail.com

आवश्यक सूचना

सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से या ई—मेल से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

वेदों में गौ-महिमा

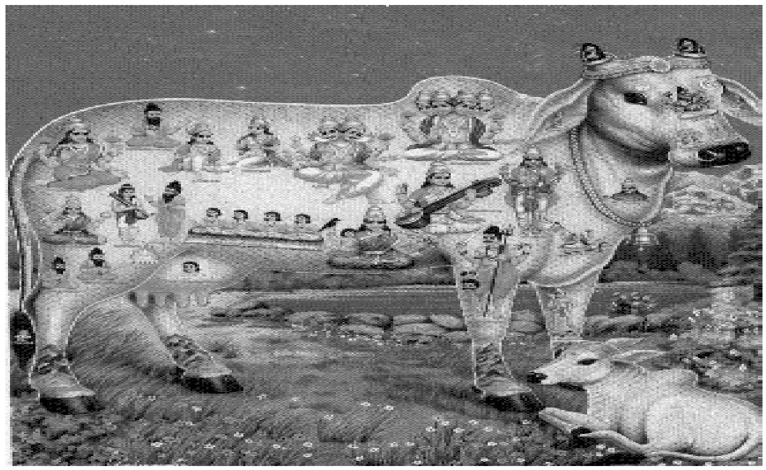

✍ देवदत्त शर्मा 'दाधीच'
जयपुर, राजस्थान

नमस्ते जायमानायै जाताया उत ते नमः
बलिभ्यः शफेभ्यों रूपायाध्न्ये ते नमः।।
यया द्यौर्यया पृथिवी यथापो गुपिता इमाः।
वंशा सहस्त्रधारां ब्रह्माणाच्छावदामति।।

इस पूरे विश्व में गौ एक महनीय, अमूल्य और कल्याणप्रद पशु है. गो (गौ) भगवान सूर्यदेव की एक प्रधान किरण केवल गौ-पशु में ही अधिक मात्रा में समाविष्ठ है. गौ और पृथ्वी ये दोनों गौ के ही दो स्वरूप हैं. दोनों ही एक दूसरे की सहयिका और सहचरी है. मृत्युलोक की आधार शक्ति पृथ्वी है और देवलोक की आधार शक्ति गौ है. संसार में पृथ्वी और गौ से अधिक क्षमावान और कोई नही है. गौ को शास्त्रों में सर्व-तीर्थमयी कहा गया है तथा गौ के दर्शन से समस्त देवताओं व समस्त तीर्थो के दर्शन हो जाते है. गौ की परिक्रमा करने से बृहस्पति सबके वन्दनीय, माधव(विष्णु) सबके पूज्य और इन्द्र ऐश्वर्यवान हो गये हैं.

बालक जब पैदा होता है तब उन्हें सर्वप्रथम मेघाजनन के लिए 'मधुधृते प्राशयति घृतं वा' यानि मधु और गौ घृत में स्वर्ण घिस कर बालक को चटाया जाता है तथा गौ दुग्ध पिलाते हैं. इसीलिये गौ को माता कहते हैं. मृत्यु के बाद गौ हमको स्वर्ण पहुंचाती है अथर्ववेद में कहा है 'अयं ते गोपतिस्तं जुषस्व स्वर्ण लोकमघि राहेयश्नैम' गौ एक अमूल्य स्वर्गीय ज्योति है, जिसका निर्माण भगवान ने मनुष्यों के कल्याणार्थ पृथ्वीलोक में किया है. गो-दुग्ध अमृत के समान हैं. गौमाता हमें दस प्रकार के पदार्थ प्रदान करती है, ताजा दुग्ध, गरम दुग्ध, मक्खन निकाला दुग्ध, दही, मट्ठा, घृत, खीस-वाजिन (खीस का पानी, नवनीत व मक्खन) शास्त्रों में गौरक्षार्थ 'गौ यज्ञ' हुआ करते थे. भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पूजन के समय 'गौ यज्ञ' करवाया था. अतः वर्तमान समय में इसकी बहुत आवश्यकता है. महाभारत में कहा गया है कि 'मैं सदा गौओं के दर्शन करूं और गौएं मुझ पर कृपा दृष्टि करे. गौऐं हमारी हैं और हम गौओं के हैं. जहां गौऐं रहें वहा हम रहें. गौऐं मेरे आगे रहे और पीछे रहे, चारों ओर रहे और मैं उनके बीच में रहूँ.
गावे परमाम्यंह नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा-
गावों अस्वाकं वयं तासां यतो गावस्तस्ते वयं
गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठतएवच
गावों में सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहम।

गौ एकादश रूद्रों की माता, अष्ट वस्तुओं की कन्या और द्वादश आदित्यों की बहिन है जो अमृत रूप दुग्ध को देने वाली है. अथर्ववेद में कहा गया है कि जिसके पास गायें रहती हैं वह एक तरह इन्द्र ही है. 'इमा या गावः स जनास इन्द्रः' तथा गौ सम्पत्ति का घर है. अतः समस्त मानवजाति के लिए गौ से बढ कर उपकार करने वाला और कोई शरीरधारी प्राणी नही है. अतः इसको देवता समान मान कर उसकी सेवा-सुश्रुषा करना व गौ हत्या बन्द करना, करवाना, गौसदन खोलना, गौसरंक्षण, गौ-पालन, गौसंवर्द्धन पंचगव्य संकलन योजना, संस्कार स्वास्थ्य केन्द्र, कामधेनु विद्यालय व स्वावलम्बन आदि कार्यों में सहयोग देना समस्त मानव का धर्म है, साथ ही भारत सरकार का व राज्य सरकारों का भी दायित्व है. भारत वर्ष में विभिन्न स्थानों में इस प्रकार के कार्य करने में जगह-जगह गौशाला स्थपित हुई है, जिसमें राजस्थान के पथमेड़ा जिला जालौर में श्री गोधम महातीर्थ आनन्दवन नाम की संख्या विशाल पैमाने पर कार्य कर रही है. जहां करीब १,२५,००० से अधिक गौ वंश की सेवा सुरक्षा की जा रही है।

अतः सभी धर्मप्रेमी, गौभक्त धर्मात्माओं से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार तन-मन-धन से सहयोग देकर गौ रक्षा के पुनीत कार्य में भागीदार बनें.

आवश्यक सूचना

'विश्व स्नेह समाज' प्रकाशन के 12वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में सदस्यों के लिए विशेष योजना ०१ अक्टूबर २०१२ से मार्च २०१३ तक वार्षिक सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित श्री बालाराम परमार 'हंसमुख' पूणे महाराष्ट्र की कृति **'नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता'** की प्रति मुफ्त प्रेषित की जाएगी.

इस योजना का लाभ उठाने की शीघ्र अपना सदस्यता फार्म भर कर भेजें

नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता

रचनाकारः
बालाराम परमार 'हंसमुख'

मूल्यः 50/रुपये मात्र

प्रकाशकः
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ.प्र. -२११०११ मो०६३३५१५५६४६

पत्रिका प्रकाशन के 12वर्ष पूरे होने पर विशेष प्रस्ताव

सदस्यता ग्रहण करें और सदस्यता शुल्क के बराबर मूल्य की किताबें मुफ्त प्राप्त करें

सदस्यता प्रपत्र

महोदय,

मैं विश्व स्नेह समाज का, एक साल, 5 साल, आजीवन एवं संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद/धनादेश/चेक/बैंक ड्राफ्ट/पे इन स्लिप द्वारा भेज रहा/रही हूं. कृपया मुझे 'विश्व स्नेह समाज' के अंक नियमित रूप से भिजवाते रहें.

1. बैंक ड्राफ्ट क्रमांक.. दिनांक..................
बैंक का नाम...
2. धनादेश क्रमांक..दिनांक...................

हस्ताक्षर

नाम :...
पता :...
....
....पिन कोड.......................
दूरभाष/मो0...ईमेलः...

विशेष नियमः

01 नवीनीकरण हेतु शुल्क भेजते समय कृपया सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें, जो पत्रिका भेजते समय कवर पर आपके नाम के ऊपर लिखा होता है.
02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें. उत्तर प्रदेश के बाहर के चेक भेजते समय बैंक शुल्क जोड़कर भेजें.
03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.
04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.
05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10/–	$ 1.00/
वार्षिक	रु0 110/–	$ 5.00/
पाँच वर्ष :	रु0 500/–	$ 150/
आजीवन सदस्यः	रु0 1100/–	$ 350/
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000/–	$ 1500/

विश्व स्नेह समाज(एक रचनात्मक क्रान्ति)

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011, उ.प्र. ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आइये हम देश का भविष्य सवारें

14 नवम्बर को बाल दिवस के रूप में बड़ी धूमधाम से मनाते हैं. लेकिन कुछ बच्चों को तो इस दिन भी एक वक्त की रोटी नसीब नहीं होती.

✍कौशतुभ तिवारी
कक्षाः 7 **जन्म तिथिः** 06.09.2000
पिताः श्री रविन्द्र कुमार तिवारी
माताः डॉ० विमला तिवारी
पताः 37/1, लेबर कॉलोनी, नैनी, इलाहाबाद, उ०प्र०
स्कूलः निशा ज्योति संस्कार भारती विद्यालय

14 नवम्बर को बाल दिवस के दिन बच्चे अपने आदर्श नेहरू जी का जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाते हैं. नेहरू जी बच्चों को बहुत पसन्द करते थे. इसलिए उन्हें बच्चे याद करते हैं. किन्तु यह सिर्फ कुछ बच्चों के लिए ही सम्भव है. जो बच्चे अपने परिवार के साथ रहते हैं. वह ही इस उत्सव को मना पाते हैं. उनके पास अच्छे कपड़े, अच्छा भोजन पाते हैं. परन्तु जो बच्चे अनाथ होते हैं उन बच्चों को तो एक वक्त की रोटी भी नसीब में नहीं होती. उन्हें जीवन की कठिन परीक्षा देनी पड़ती है. जिसमें कुछ तो सफल हो जाते हैं और कुछ असफल हो जाते हैं.

भारत की डेढ़ अरब की आबादी में 20 प्रतिशत गरीब बच्चे होते हैं. हमारे देश का भविष्य सड़क पर खड़ा होकर भीख मांग रहा है. यह दृश्य पूरा भारत कैसे देख सकता हैं. नेहरू जी हर बच्चे को अपने बेटे या बेटी के समान समझते थे. किन्तु 21वीं शताब्दी में भारत यह पूरी तरह से भूल चुका है. हमारी केन्द्रीय सरकार ने सरकारी स्कूल और कॉलेज इसलिए ही तो खुलवाए हैं कि गरीब बच्चे उसमें शिक्षा पाकर आगे बढ़ें. किन्तु यह सम्भव नहीं हो पा रहा है क्योंकि इसमें सरकारी अधिकारी और बच्चों के माता-पिता दोनों का दोष है. इसका कारण सरकारी अधिकारी बताते हैं कि क्या करोगे पढ़ लिखकर मांगनी तो भीख ही है. माता-पिता भी तो कुछ कह नहीं पाते. दुखद लगता है कि बच्चे अपना अधिकार प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं.

भारत में सबको एक समान नहीं समझा जा रहा है. हमें इस भावना को लोगों के दिल से निकालना होगा कि हम सब भारतवासी है. इसलिए हममें कोई अन्तर नहीं हैं. यह सबको याद दिलाना होगा.

सही मायने में बाल दिवस तभी सार्थक होगा जब भारत के हर एक बालक और बालिका को उनका अधिकार मिलेगा. स्वराज सबका जन्म सिद्ध अधिकार हैं. बच्चों को उनका अधिकार नहीं मिलता क्योंकि लोग उनका साथ नहीं देते. लोग उन गरीब बच्चों को अशुद्ध और अछूत समझते हैं. हम लोगों को कैसे समझाए कि कोई अशुद्ध या अछूत नहीं होता. लोगों को तो शर्म आनी चाहिए कि अपने देश के उज्ज्वल भविष्य को अंधकार में ढकेल देते हैं.

बच्चों को दर-दर की ठोकर के कारण आगे के समय में देश को बर्बाद करने में लग जाते हैं. हम जिस देश को महान कहते हैं. वह भारत महान की जगह कलंकित हो रहा है.

जिस धरती पर राम-कृष्ण, बुद्ध जैसे लोग जन्में और धरती को पवित्र कर दिया, जिस देश में गंगा, यमुना, सरस्वती जैसे नदियां अपने जल से यहां के मानव को शुद्ध कर रही है वहीं मानव आज के समय में कितना क्रूर हो गया है. उसने अपनी पावन नदी गंगा को दूषित कर दिया. सरकार ने भ्रष्टाचार फैलाकर लाखों परिवारों की जिन्दगी बर्बाद कर दी और अब इसके शिकार छोटे-छोटे मासूमों को भी किया जा रहा है.

आज भारत का बच्चा खाना, पानी, शिक्षा, कपड़े और अच्छी नींद मांग रहे हैं पर इन गरीबों को यह नहीं मिल पाता है. कुछ लोग ऐसे होते हैं जो बच्चों का अपहरण करके उनके हाथ पाव बांधकर बूरी तरह पीटते हैं और उनसे भीख मंगवाते हैं और फिर चोरी करवाते हैं. यह एक बहुत बड़ा अपराध है. देश की पुलिस को यह ध्यान में रखना चाहिए कि कोई बच्चा सड़क पर भीख मांग रहा है तो उससे जांच करके उन मुजरिमों को पकड़ना चाहिए जो बच्चों के साथ ऐसा गलत काम करते हैं. किन्तु यह सम्भव है कि नही ये बताना मुश्किल हैं.

आज के समय में बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान नहीं दिया जा रहा है. बल्कि लोग बच्चों से काम करवाते हैं. हमें तो उन बच्चों की सहायता करनी चाहिए. हम थोड़ी-थोड़ी भी सहायता करें तो हम लोग इन बच्चों के भविष्य को संभाल सकते हैं. बच्चो की सहायता करके आइये हम देश का भविष्य संवारे.

अधिकार

खत्म कर दो तुलनात्मक खाई को!
क्यों दीन-हीन
और मान-हीन बन
जी रहे हो जीवन को?
डरो नहीं आगे बढ़ो
हो मुश्किल
फिर भी न रूको;
तुम भी जन्मे हो साधिकार
क्यों अपना हक छोड़ोगे?
करके श्रम, ले-लो,
आगे बढ़ो
है अधिकार यही
क्यों डरते हो?
आने वाला कल
तुम्हारा ही होगा
हर आंखों का सपना
अब सच्चा होगा।
एक-एक मिल ग्यारह होते
क्या बतलाना
तुम भी मिल एक हो गये
तो,
हर कोना-कोना
सोने पे सुहागा होगा।

बबिता शर्मा
गाजीपुर, उ.प्र.

मुक्तक

जिन्दा लाशों को नोंचते बोटी
और चिताओं पे सेकते रोटी
समर्थ हैं जो चाल चलते हैं
असमर्थ सिर्फ बने हैं गोटी
पास अम्बर है जमीं है गायब
अब तो आंखों की नमी हैं गायब
जिसको देखो वही फरिश्ता है
सिर्फ अच्छाई है कमी है गायब
मेरी आँखों में अश्क है तारी
और लव पर भी आह है जारी
है ये दोस्तों की फकत दरियादिली
नहीं कोई है और दुश्वारी

डॉ० सतीश चन्द्र 'राज'
सोनभद्र, उ.प्र.

रोटी-रोटी-रोटी

अपना ज्ञान
अपना विज्ञान
अपनी कला
अपना सौन्दर्य
अपना विकास
अपनी संस्कृति
अपने पास रखो।
मैं कई दिनों से
भूखा हूं
मुझे रोटी चाहिए।
मेरा सपना
मेरा भविष्य
मेरा जीवन
मेरा सौन्दर्य
कला, विज्ञान
सब कुछ रोटी है।
मैं भारत के पिछड़े क्षेत्र का
गरीब मजदूर हूँ
आत्महत्या करता किसान हूं
मैं अन्न उगाता हूँ
पसीना बहाता हूं
लेकिन दो वक्त की
रोटी के लिए तरसता हूँ
भाई तुम इंडिया में रहते हो
मैं भारत में रहता हूं
तुम विकास, कम्प्यूटर, अणु, परमाणु
शक्ति सम्पन्नता, चुनाव की बातें करों
मैं तो एक ही बात जानता हूं
रोटी-रोटी और रोटी।

देवेन्द्र कुमार मिश्रा, छिन्छवाड़ा,म.प्र.

ये है एयर बैग जो जमीनी हवाई जहाज से जा रही है

टेम्पों भले ही लड़े पर मोबाइल पर बात न छूटे

कविंताएँ

तुमको यही बताना है

जब आना हो तब आ जाना घर का पता पुराना है
जहां कभी हम तुम रहते थे बैठक वही ठिकाना है
बूढ़ा बरगद खड़ा अभी तक शीतलता की छांव लिये
अभी गांव का भुतहा पीपल पड़ा पीर का पांव लिये
ओझाई का अब भी अड्डा मंगरू का बुतखाना है
अब भी बुधिया की माई चिट्ठी पढ़वाने आती है
मुंशी जी की चक्की पर आटा पिसवाने जाती है
अब तक वही पुराना धंधा खाना और कमाना है
अभी गरीबी सौदा करती श्रम की और हराई की
खड़ी फसल काटी जाती है डंडे की बरियाई की
है दबंगई का हड़कान अभी वही गरियाना है
रहता हाथ सकेत बहुत बस खेती एक सहारा है
गायें सारी बेच चूंका हूं जब से लकवा मारा है
थोड़ी सी खेती पर दूभर अब परिवार चलाना है
आ जाती है बाढ़ अभी भी खेती होती गायब सुन
पिछले साल हुआ है बबुआ थाने का अब नायब सुन
बाकी तो सब ठीक-ठाक है दुख पापा का जाना है
बदल गया है गांव का नक्शा चकबंदी के होने से
चकरोडो के कट जाने से भाग बटाई होने से
घर के पास बनी है टंकी तुमको यही बताना है।

✍ **शिवानन्द सिंह 'सहयोगी',** मेरठ, उ.प्र.

दीप दीवाली के

दीप दीवाली के जगमग कर रहे है संसार को।
ये चुनौती दे रहे हैं, धोर तम-अंधियार को।।
पंक्तियों में सजे दीपक, दीपमाला बन गयी।
नन्हीं-नन्हीं ज्योति इनकी, नव उजाला बन गयी।।
सौंधी-सौंधी महक से महका रहे घरबार को।
दीप................
दे रहे हैं ये संदेसा, बांट दो निज नेह को।
दे रहे हैं हम उजाला, तिल-तिल जलाकर देह को।।
जो भी कुछ है पास में, बांटो सकल संसार को।
दीप.........
नेह दीपक सभी के हृदय में जलते रहे।
सुखद स्वर्णिम भविष्य के स्वप्न भी पलते रहे।।
हो सभी सुखी-निरोगी, फैलायें सद्विचार को।।
दीप..........
हम सभी दीपक बनें, फैलायें नव विचार को।
तम हरें अज्ञान का, नव ज्ञान के प्रसार को।।
घृणा ईर्ष्या तम मिटे, दें प्रेम संदेस उजियार को।।
दीप..........

✍ **डॉ० अनिल शर्मा 'अनिल',**
बिजनौर, उ.प्र.

यात्राएं

ट्रेन चली
और तुम साथ हो लिये।
खिड़की से बाहर,
खिले टेसू के फूलों सा,
जिसके बसन्त पर पहरा था।
चिड़ियों, भौरों, तितलियों का।
अचानक, नारियल, सुपारी
आम, कटहल
सेमल के वनों के बीच,
सुनायी दे जाती
कोयल की कूक।
धान के सूखे खेतों में,
पड़ती दरारें।
कोरा पत्र है मौसम का,
जिन पर लिखेगा
पावस अपना नाम।
अरूणाचल स्टेशन से
छूट गया शहर।
साल गंगा में छिप गये,
बराक के किनारे
दीखने लगे मुझे
काटाखाल के दो मुंहे पर।
किनारे पड़ी नावें,
और छांव सुस्ताते मछुआरे,
प्रतीक्षा में पुरवाई के।
गाड़ी चलती रही,
छूटते रहे लोग,
नदी, टीले, पर्वत
स्टेशन, चाय, बिस्किट वाले,
लाइनें काटती रही लाइनों को।
कुछ अचलस्थ
तो कुछ लुढ़के डिब्बों की उदासी
क्रांसिग, लाइन क्लीयर, सिग्नल।
सब होता रहा यथावत,
गुफाओं से गुजरती रेल,
मैं पूछना चाहती हूं तुम से,
क्या ऐसी ही होती है यात्राएं?।।

✍ **शुभदा पांडेय**
असम विश्वविद्यालय, सिलचर,
असम-७८८०११

कविंताएँ

ग़ज़ल

है ख़ता उनसे जो इज़हारे तमन्ना कर दिया
दिल ने मेरे दर्द का मुझसे तक़ाज़ा कर दिया।
इस क़दर मैं खो गया था हसरतों की भीड़ में
वक़्त ने दामन छुड़ा कर मुझको तन्हा कर दिया।
पूछते हो आप, मेरी बेबसी का माजरा
मैं समन्दर था जिसे लोगों ने क़तरा कर दिया।
बेरुख़ी होने लगी है अब मेरे रुख़ से अयाँ
ऐ मेरे दिल तू ने मेरे साथ ये क्या कर दिया।
मिस्ले आईना बिखर कर रह गई है आरज़ू
मेरी ग़ुर्बत का किसी ने जब भी सौदा कर दिया।

सरफ़राज अहमद 'आसी', गाजीपुर, उ.प्र.

अमर शहीदों का नारा है

पंद्रह अगस्त है पावन चंदा, २६ जनवरी ध्रुव तारा है
चमक रहे ये झिलमिल करते, अमर शहीदों का नारा है
स्वतंत्रता का भान बहुत है, स्वतंत्र का मान बहुत है
आजादी पर परतंत्रता का, बोध मात्र अपमान बहुत है
बहनों के चुड़ी गहनों की, सिंदूर बहे अबलाओं की
भर-भर आये माताओं की, तपते आंसू में आंच बहुत है
सिंचित नित जिन पर करते, ये छौना परम दुलारा है
चमक रहे ये झिलमिल करते, अमर शहीदों का नारा है
छिप ना जाये, ये कीमती धरोहर, भूल भुलैया के बादल में
छूट ना जाये ये रत्न अनमोल, आतंकवाद के आंचल में
भय ही करता शक्ति संचार, शक्ति ही भय भगाती है
बलिदानों के रक्त सिंदूर से, माता निज मांग सजाती है
देश की धरती सोंधी माटी, सुरभित चमन हमारा है
चमक रहे ये झिलमिल करते, अमर शहीदों का नारा है
देश भक्ति जज्बा हो दिल का, अनुशासित नियम हमारा हो
लग्न-परिश्रम सिद्धांत हो अपने, विश्वास का संबल हमारा हो
दूर-दर्शिता हो आंखों में, स्वभाव नम्रता का प्रारूप
कलम बने इतिहास लेखिका, हम है लघु बलिदानी रूप
आओ अब अपनी बारी है, अपना बुलंद सितारा है
चमक रहे ये झिलमिल करते, अमर शहीदों का नारा है.

श्रीमती सुधा शर्मा, रायपुर, छ.ग.

शिक्षा ऐसी हो

शिक्षा ऐसी हो हमको संस्कार सिखाए।
'विद्या ददाति विनयम्' हमें विनम्र बनाए।
'नीर-क्षीर-विवेक', न्याय की महिमा गाए।
'वसुधैवकुटुम्बकम्' का हमको सन्मार्ग दिखाए।
शिक्षा ऐसी हो.........
माता-पिता-गुरू-बांधवों से पोषित हो।
नारी-वृद्ध-असहाय कहीं भी ना शोषित हो।
मनु की दुनिया में मानव फिर परिभाषित हो।
'सर्वधर्म समभाव', प्रेम का पाठ पढ़ाए।।
शिक्षा ऐसी हो..........
ब्रहमा-विष्णु-महेश सी हों राज व्यवस्थायें।
कर्मक्षेत्र में कभी न पनपें महत्वाकांक्षाएं।
धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष, अध्यात्म परम्पराएं।
'सर्वेभवन्तु सुखिनः' का जो मर्म बताए।।
शिक्षा ऐसी हो..........
वेद-पुराण-गीता-कुरान प्रकाश फैलाएं।
'अतिथि देवोभव' संस्कृति की हवा बहाएं।
'भारत मेरा है महान्' जन-गण-मन गाएं।
वीरों की भूमि है जो बलिदान सिखाए।
शिक्षा ऐसी हो..........
यह प्रताप भामाशाहों की गर्व भूमि है।
बापू लाल जवाहर की यह कर्म भूमि है।
वीर शिवाजी रणबांकुरों की धर्म भूमि है।
रग-रग वीरों की गाथा रोमांच जगाए।
शिक्षा ऐसी हो..........

आकुल, कोटा, राजस्थान

ग़ज़ल

जीवन में दुख आए हैं, टिसुए बहाए है।
सूबे का हाल मत पूछो, इज़्ज़ज को बस बचाए है।
खुशियॉ नहीं मिली तो क्या, हम ग़म में मुस्कराए हैं।
फिर ना कहीं नहाए वो, गंगा में जो नहाए है।
इस दौर में भला किसने, सातो वचन निभाए हैं।
छानी है ख़ाक सहरा की, मेंहदी नहीं लगाए हैं।
सर झुक गया अंधेरों का, इतने दिये जलाए हैं।
उठ आए उसके कूचे से, नज़रें वहीं जमाए हैं।
रिश्ते निभाए हैं 'अनवर', रिश्ते नहीं भुनाए है।

फ़साहत अनवर, मैनपुरी, उ.प्र.

लघु कथाएं

अनबुझी पहेली

सुख में सभी साथ देते हैं किन्तु दुख, दर्द में केवल सच्चे मित्र ही मददगार बनते हैं. इस कहावत को चरितार्थ करते हुए लता ने अपनी सहेली पुष्पा को काफी सहयोग प्रदान किया. घर परिवार से बेदखल शादीशुदा होते हुए भी विधवा की भांति पुष्पा पूरी तरह विचलित थी. पति द्वारा प्रताड़ित, समाज की नजरों में भी बदचलन समझी जाने वाली पुष्पा मन वचन कर्म से पतिव्रता नारी थी. भारतीय आदर्श नारी के सारे गुण उसमें मौजूद थे. मगर मानसिक, शारीरिक व आर्थिक रूप से तंग होने के कारण उसकी स्थिति ठीक नहीं थी. बेचैन, निराश, दुखी पुष्पा को कहीं भी आशा की किरण नहीं दिखाई पड़ रही थी. ऐसे में लता का आगमन उसके जीवन में नया मोड़ ले आया. बचपन की सहेली लता ने पुष्पा को धैर्य बंधाते हुए बहुत प्यार से समझाया. शनैः शनैः पुष्पा की हालत में सुधार भी आया. इसी बीच लता ने पुष्पा की पहचान अपने करीबी रिश्तेदार मिलनसार कमल से करवा दी. कमल एक अच्छा कलाकार तो था ही लेकिन साफ दिल नेक इंसान भी था. उसमें दया एवं सहयोग की भावना कूट-कूट कर भरी थी. उसने पुष्पा के गम को कम करने का भरसक प्रयास किया. परिणामस्वरूप पुष्पा के हृदय में कमल के लिए अपार आदर व असीम प्यार स्थापित हो चुका था.

दो वर्षो में ही दोनों एक दूसरे के इतने नजदीक आ गये कि सारे दुख दर्द कोसो दूर हो गये. आखिर लता की मेहनत रंग लाई. वह यह चाहती थी कि पुष्पा को एक ऐसा हमसफर मिले जो उसकी भावना को भलीभांति

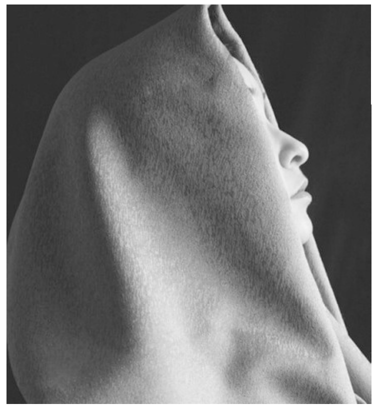

समझ सके. कमल ने अपना फ़र्ज़ बखूबी निभाया लेकिन दोनों सहेलियों के बीच कमल आज भी अनबुझी सी पहेली बना हुआ है. कभी-कभी दोनों यही सोचती है कि कमल कहीं धोखा तो नहीं देगा. फिलहाल सब ठीक चल रहा है फिर भी मर्दो का कोई भरोसा नहीं कब फिसल जाये, कब हाथ से निकल जाये. इन्हीं ख्यालों में डूबी लता को पता भी नहीं चला कि पुष्पा और कमल का अनूठा प्रेम इस तरह परवान चढ़ेगा कि सारा जगत उनका इतिहास पढ़ेगा. विश्वास ही नहीं होता कि दोनों एक दूसरे के जीवन साथी बनकर साथ निभायेंगें. अनबूझी पहली बने हुए कमल के क्रियाकलापों से लता और पुष्पा दोनों ही पूर्णतः प्रसन्न है. कमल भी काफी खुश है.

-रामचरण यादव 'याददाश्त'
बैतूल, म.प्र.

अपहरण

'इस देश में प्रतिभा की कोई कीमत नहीं है. अमेरिका योग्यता का मोल जानता है. मेरी योग्यता को पहचानकर ही तो अपने यहां नौकरी दी है.' सुरेश को एम.टेक करते ही अमेरिका की एक कम्पनी में नौकरी मिल गई थी. उसी के सम्बन्ध मे अपने दोस्तों को बता रहा था. सुरेश की मां भी अपने बेटे की बात सुन रही थी. वह बोली-' अमेरिका ने तुम्हारी योग्यता का सम्मान नहीं किया है. भारत की योग्यता का सरेआम अपहरण कर लिया है.'

फ़र्ज़

'यार तू अमेरिका जाना क्यों नहीं चाहता?' सुरेश और रमेश ने साथ-साथ अंतरिक्ष विज्ञान में इंजिनियरिंग की थी. सुरेश ने आमयाईन अमेरिका की एक कम्पनी में आवेदन किया था. उसे नौकरी मिल गई थी. सुरेश ने रमेश से भी कहा था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया था.

'योग्य मुझे इस देश ने बनाया है. मेरा फ़र्ज़ है मैं अपनी योग्यता का उपयोग इस सदेश की उन्नति में करूं.' **-किशन लाल शर्मा,** आगरा, उ.प्र.

सम्मान

टिल्लू भाई साहब शहर के बेहद चलते-पुर्जे इन्सान है. सामने वाले को पटाने में वे माहिर हैं. उन्होंने एक कार्यक्रम आयोजित कर दिया और स्थानीय कॉलेज के प्राचार्य का सम्मान करवा दिया. फिर बोले, 'अब आया ऊंट पहाड़ के नीचे. बड़ा आदर्शवादी बनता था. अब मेरे निखट्टू भाई को कॉलेज में अवश्य दाखिला दे देगा.'

-डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

आपकी की डाक

गागर में सागर

आदरणीय द्विवेदी जी,

सादर अभिवादन।

आपके द्वारा भेजी गयी 'विश्व स्नेह समाज' निरन्तर मिल रही है. पत्रिका के विषय में इतना ही कहा जा सकता है कि आप 'गागर में सागर' भर रहे हैं.

सतीश चन्द्र शर्मा 'सुधाशु'
रिजर्व पुलिस लाइन्स,
मैनपुरी-२०५००१, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++

सम्पादकीय सामयिक है

आदरणीय द्विवेदी जी,

सादन नमन!

'विश्व स्नेह समाज' का जून-जुलाई अंक प्राप्त हुआ. बहुत-बहुत धन्यवाद. संपादकीय के अन्तर्गत विधायकों व सांसदों की आय में इतना इजाफा कैसे? एक सामयिक प्रश्न है. यह राजनीति की कालिख को उजागर करता है. अन्य सभी आलेख मननीय हैं. कहानी 'किरया-करम' यथार्थ को उजागर करती है.

डॉ० संतोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी
स्नातकोत्तर शिक्षक, जवाहर नवोदय विद्यालय, कोठी, जींद-१२६१०२, हरियाणा

+++++++++++++++++++++

सेवा में,

श्रीमान सम्पादक महोदय

आपकी पत्रिका मैंने अपने मित्र के माध्यम से पढ़ी जिसमें हृदय को उत्साहित करने वाले एवं समाज की एक प्रमुख समस्या डॉ० गार्गी शरण मिश्र 'मराल' जी का लेख बहुत ही प्रशंसा का है एवं संतोष शर्मा 'शान' की कहानी भी बहुत प्रेरणादायक थी.

स्नेह लता
पुत्री श्री रामचन्द्र नाथ, लखीमपुर, समोदिया, रामपुर

आदरणीय सम्पादक जी

सादर नमस्कार

विश्व स्नेह समाज का सितम्बर अंक मिला. धन्यवाद. विभिन्न सामग्रियों के साथ पत्रिका का प्रत्येक अंक पठनीय है. संस्था के माध्यम से आप कई सारस्वत आयोजन कर रहे है. बधाई

रामजन्म मिश्र
प्र.सम्पादक-प्रगति वार्ता, डॉ०राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, साहिबगंज, झारखंड

++++++++++++++++++++++

पत्रिका का अंक मिला. प्रेरक प्रसंग, अपनी बात, कविताएं, हिन्दीतर भाषी रचनाकार, अध्यात्म, महिला रचनाकार आदि स्तम्भ उल्लेखनीय है. सीतादेवी का लेख भगवान बड़ा या गुरू सराहनीय है. **एस.बी.मुरकुटे,**
क्रास नं०२, आनंद नगर, बड़गांव, बेलगाव-५

++++++++++++++++++++++

'महिला रचनाकार विशेषांक' निकालकर हम महिलाओं को उपकृत किया है. स्तंभ 'मुद्दा' मे 'स्त्री के सन्दर्भ में धर्म नई व्याख्या हो' चमेली जुगरान का लेख अति सराहनीय रहा. पत्रिका के माध्यम से सभी पाठक बन्धुओं से अनुरोध है कि वे अपने अन्दर के भ्रष्टाचार को खत्म कर नयी जागृति लाएं जिससे आज त्रस्त समाज प्रसन्नता और शान्ति का अनुभव करें. स्थाई स्तंभ सराहनीय हैं. पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु आपको कोटि-कोटि बधाई.

बबीता शर्मा, गाजीपुर, उ.प्र.

+++++++++++++++++++++

अगस्त-२०१२ का अंक का संपादकीय 'आमिर खान के नाम खुला पत्र' शानदार, निर्भिक और बेवाक है. ढेरो बधाई. **शैलेष गौतम,**
प्रीतमनगर, इलाहाबाद

गुजारिश

1. 'विश्व स्नेह समाज' आपकी अपनी पत्रिका है. इसे अकेले न पढ़ें, बल्कि दूसरों को भी इससे परिचित कराएँ. आप अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएँ ही भेजें. एक बार में अधिकतम दो ही रचनाएँ भेजें. उनके प्रकाशनोपरान्त ही दूसरी रचना भेजें. रचनाएँ पर्याप्त हासिया छोड़कर कागज के एक तरफ स्पष्ट सुपाठ्य अक्षरों में लिखी हुईं या टंकित होनी चाहिए. रचनाओं पर मौलिकता व उनके अप्रकाशित होने का उल्लेख अवश्य करें. बिना उचित टिकट लगे जवाबी लिफाफे के अस्वीकृत रचना लौटाई नहीं जाती.

3. रचना प्रेषण के कम से कम तीन माह तक अन्यत्र प्रकाशित होने के लिए रचना न भेजें और न ही कहीं प्रकाशित रचना भेजने. वैसे तो पत्रिका सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध कराई जा रही है. फिर भी मिलने में असुविधा हो तो सदस्यता ग्रहण कर लें, पत्रिका डाक द्वारा भेज दी जाएगी.

4. सदस्यता शुल्क पत्रिका के खाते में सीधे जमा कर/धनादेश/बैंक ड्राफ्ट द्वारा **'विश्व स्नेह समाज'** के नाम भेजें. शुल्क के साथ-साथ एक पोस्टकार्ड भी भेजें, जिस पर अपना नाम व पता साफ-साफ लिखें.

5.जो रचनाएँ आपको अच्छी लगें उस बाबत हमें को खत लिखकर अवश्य सूचित करें. अर्थात् पाठकीय प्रतिक्रिया देवें.

6. 'विश्व स्नेह समाज' के परिशिष्ट अथवा प्रायोजित विशेषांक योजना में शामिल होने के लिए 09935959412 या 09335155949 पर सम्पर्क करें.

7. विश्व स्नेह समाज मात्र एक पत्रिका नहीं है बल्कि समाज में एक रचनात्मक क्रांति लाने की माध्यम है. इसे हर सम्भव सहयागे प्रदान करें.❑संपादक

दहशत कहीं जान पर न बन जाये

✍ सुशीला कुमारी

'अचानक मैं बिना किसी कारण डर के मारे सिहर उठी. मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा, मेरी छाती तेजी से चलने लगी और मुझे सांस लेने में भी दिक्कत होने लगी. मुझे लगा कि मेरी मौत निकट आ गयी है. '' पसीने से तर-बतर मिनाक्षी जैन ने एक ग्लास पानी पीने के बाद पूरे वाकये के बारे में बताया- कल जब वह पास के एक शॉपिंग मॉल में गयी थीं तब उनके साथ कुछ ऐसा ही हुआ जिसके तुरंत बाद उन्हें निकट के एक अस्पताल में ले जाया गया जहां उनकी ईसीजी की गयी. ईसीजी से पता चला कि हृदय की धड़कन में असामान्यता है लेकिन एंजियोग्राफी करने पर उनकी रक्त धमनियों में किसी रुकावट का पता नहीं चला.

सुप्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ एवं मेट्रो हास्पीटल्स एंड हार्ट इंस्टीट्यूट के चेयरमैन **डा. पुरूशोत्तम लाल पैनिक** अटैक के प्रकोप के बारे में कहते हैं, ''छाती में दर्द की शिकायत लेकर अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में आने वाले २५ प्रतिशत मरीज दरअसल ''पैनिक अटैक'' से ग्रस्त होते हैं। ''पैनिक अटैक'' के दौरान मरीज को जो परेशानियां होती हैं या उसे जो लक्षण उभरते हैं उनसे यह समझ लिया जाता है कि उन्हें या तो दिल का दौरा पड़ा है या उन्हें कोई और जानलेवा बीमारी है. जिन मरीजों में इस तरह के लक्षण होते हैं उन्हें कई खर्चीले चिकित्सकीय परीक्षण कराने पड़ते हैं और तब जाकर पता चलता है कि उन्हें कोई अन्य बीमारी नहीं है.

पैनिक अटैक होने पर अचानक डर, चिंता और घबराहट जैसे लक्षणों एवं अन्य तरह के कष्टों के अलावा कुछ और लक्षण उभर सकते हैं. यह दौरा कुछ नियमित समय के अंतराल पर पड़ सकता है अथवा चिंता, घबराहट, सामाजिक कारणों से होने वाले तनाव या भय के साथ भी यह दौरा पड़ सकता है. 'पैनिक अटैक' कई मिनट तक जारी रह सकता है और इसमें मरीज को अत्यधिक कष्ट होते हैं. इसके लक्षण दिल के दौरे की तरह होते हैं. रात में पड़ने वाले 'पैनिक अटैक' 10 मिनट से कम होते हैं लेकिन कुछ लोगों को बिल्कुल सामान्य होने में अधिक लंबा समय लग सकता है.

48 वर्षीय श्रीमती मिनाक्षी जैन का यह मामला बोस्टन के मैसाच्युसेट्स जनरल हास्पीटल के एक ताजे अध्ययन के निष्कर्षों की पुष्टि करता है जिसमें यह पाया गया कि जिस उम्रदराज महिला को कम से कम एक बार पूर्ण 'पैनिक अटैक' का दौरा पड़ा हो उसे दिल का दौरा पड़ने या स्ट्रोक की आशंका अधिक होती है और उन्हें अगले पांच वर्षों में असामयिक मौत का खतरा अधिक होता है.

आम तौर पर चिकित्सक पैनिक अटैक से ग्रस्त मरीजों को आश्वस्त करते हैं कि उन्हें कोई गंभीर खतरा नहीं है. लेकिन इस तरह के आश्वासन मरीजों की परेशानियाँ और बढ़ा सकते हैं. अगर डॉक्टर मरीज से ''कुछ गंभीर नहीं है'', ''जो कुछ भी है आपका वहम है'' और ''चिंता की कोई बात नहीं है'' जैसी बातें कह कर सांत्वना दे तो मरीज के मन में यह गलत धारणा बैठ सकती है कि उसे दरअसल कोई दिक्कत नहीं और इसका इलाज या तो संभव नहीं है या इलाज कराना जरूरी नहीं है. वास्तविकता यह है कि पैनिक अटैक निश्चित ही गंभीर स्थिति है, हालांकि यह हृदय के लिये घातक नहीं है.

दहशत से भरी श्रीमती जैन कहती हैं, ''उस घटना के बाद से मैं इतनी

डा. पुरूषोत्तम लाल कहते हैं- ''पैनिक अटैक हाइपरटेंशन जैसे हृदयवाहिक रोगों के जोखिम कारकों के साथ जुड़े हो सकते हैं। चिंता या घबड़ाहट हृदय एवं हृदय रक्त वाहिका प्रणाली पर बुरे प्रभाव डाल सकती है जैसे कि दिल की धमनियों में सिकुड़न, रक्त के जमा होने की प्रवृति बढ़ने और हृदय धड़कन की ताल में गड़बड़ी।''

डरी हुई हूं कि जब मैं बाहर जाने लगती हूं तो हर समय मेरे पेट में दर्द होने लगता है और मुझे लगता है कि कोई और पैनिक अटैक पड़ने वाला है अथवा मेरे साथ कुछ अनहोनी होने वाली है." श्रीमती जैन अब ज्यादातर घर में ही रहती हैं और घर में रहकर ही चिकित्सक की सलाह लेती हैं।

ब्रिटिश शोधकर्ताओं ने एक अध्ययन के आधार पर सुझाया है कि जिन्हें पैनिक अटैक पड़ा हो या जिनका पैनिक अटैक का इतिहास रहा हो उन्हें दिल की बीमारियों के संबंध में समुचित जांच करानी चाहिये.

हालांकि पैनिक अटैक युवा अवस्था में ही शुरू हो जाता है लेकिन कुछ लोगों में इसके लक्षण बाद में उभर सकते हैं. लगातार पैनिक अटैक के कारण उत्पन्न जटिलताओं या लक्षणों में कुछ खास तरह के डर (फोबिया), खास तौर पर घर छोड़ने पर होने वाले डर (एगोरफोबिया), सामाजिक गतिविधियों से दूर रहने की इच्छा, उदासी, काम-काज में दिक्कत, स्कूल में पढ़ाई में दिक्कत, आत्महत्या की सोच या प्रवृत्ति, वित्तीय दिक्कत, शराब या अन्य मादक पदार्थों का सेवन आदि शामिल हैं. पैनिक डिसआर्डर के कारण मरीज में दिल की बीमारियों के खतरे बढ़ते है.

क्यों होता है पैनिक अटैकः पैनिक डिसआर्डर के एक सिद्धांत के मुताबिक, कई शारीरिक एवं मानसिक तंत्र से निर्मित शरीर की प्राकृतिक ''अलार्म प्रणाली'' किसी तरह के खतरे होने पर सक्रिय हो जाती है और व्यक्ति को सतर्क करती है। लेकिन यह कई बार उस समय भी अनावश्यक तौर पर बज उठती है जब कोई खतरा नहीं होता है. वैज्ञानिक अभी इस बात पर निश्चित नहीं हैं कि ऐसा क्यों होता है अथवा क्यों अन्य लोगों की तुलना में कुछ लोगों को इस तरह की समस्या अधिक होती है. पैनिक डिसआर्डर की समस्या परिवार दर परिवार चलती रहती है. इसका मतलब यह है कि इसके पीछे आनुवांशिक (जीन की) भूमिका भी है जो यह निर्धारित करती है कि किसे यह समस्या अधिक होगी.हालांकि जिन लोगों के परिवार में इस बीमारी का कोई इतिहास नहीं रहा हो उन्हें भी यह समस्या हो सकती है। पहला पैनिक अटैक अक्सर शारीरिक बीमारी, जीवन से जुड़े किसी बड़े तनाव या कुछ दवाइयों के सेवन के कारण भी हो सकता है. कुछ दवाइयां भय संबंधी प्रतिक्रियाओं से जुड़े मस्तिष्क के हिस्से की सक्रियता को बढाती हैं. कुछ महिलाओं में गर्भावस्था के दौरान पैनिक अटैक होने की दर में बढ़ोतरी देखी जाती है.

क्या होगा अगर इलाज न कराएंः पैनिक डिसआर्डर का समय पर उपचार नहीं होने पर एंग्जाइटी उस हद तक बढ़ सकती है कि पैनिक अटैक होने अथवा उससे बचने या उसे छिपाने के कारण किसी व्यक्ति का जीवन गंभीर रूप से प्रभावित हो सकता है. इसके कारण कई लोगों को दोस्तों अथवा परिवार के सदस्यों के साथ दिक्कत हो सकती है, कई लोग स्कूल की परीक्षाओं में फेल हो सकते हैं और कई लोगों की नौकरी छूट सकती है. हालांकि कई बार पैनिक अटैक की समस्या समय के साथ कम होती जाती है लेकिन आम तौर पर यह समस्या अपने आप ठीक नहीं होती और इसके लिये विशिष्ट उपचार जरूरी होता है. (मेडी मीडिया)

विश्व स्नेह समाज के 10 वार्षिक सदस्य बनाएँ और 250/-रुपये की पुस्तकें उपहार में पाएँ. 10 सदस्यों के नाम व पते सहित रुपये 1100/मात्र की राशि धनादेश/ड्राफ्ट द्वारा भेजने का कष्ट करें।

विश्व स्नेह समाज मासिक, एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, उ.प्र.

साहित्य समाचार

पं. प्रतापनारायण मिश्र स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान

'सारी तकनीकी का उद्देश्य सुख व प्रसन्नता देने की है. वे शब्दों का चयन कर अपने भावों को संप्रेषित करते हैं वे मनुष्य को मुस्कराने का अवसर देते हैं. ऐसे शब्दों के इंजीनियर शास्वत सुख देने वाले साहित्यकार नमन के योग्य है.' उक्त उद्गार १८वें युवा साहित्यकार सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि प्राविधिक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कृपाशंकर जी ने व्यक्त किये. कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्राम्य विकास विभाग के उपायुक्त श्री विजयकृष्ण भागवत ने की. कार्यक्रम में काव्य विधा के लिए लखनऊ के अभय प्रताप सिंह, कथा साहित्य के लिए डॉ० अंजलि, बाल साहित्य के लिए राजस्थान के श्री सत्यनारायण 'सत्य', पत्रकारिता विध ा के लिए बिहार के सतीश कुमार 'साथी' तथा संस्कृत के लिए नई दिल्ली के डॉ० परमानन्द झा को पं० प्रतापनारायण मिश्र स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान-२०१२ से सम्मानित किया गया. सम्मान में १०,०००/रुपये नगद, सरस्वती प्रतिमा, अंगवस्त्रम प्रदान किया गया. कार्यक्रम का संचालन डॉ. विजय कर्ण ने किया. इस अवसर पर प्रो. देवेन्द्र प्रताप सिंह, डॉ. सूर्यकांत, श्री रामनिवास जैन, प्रेमकुमार रस्तोगी सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित थे.

इस अवसर पर भाऊराव देवरस न्यास की अर्द्धवार्षिक पत्रिका सेवा चेतना के मातृभाषा विशेषांक का लोकार्पण भी अतिथियों द्वारा किया गया.

कीर्तिवर्द्धन को 'हिन्दी भाषा भूषण'

मुज़फ्फरनगर, उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० ए.कीर्तिवर्द्धन को सांहित्य मंडल, श्रीनाथ द्वारा उनकी हिन्दी सेवा के लिए, दो दिवसीय सम्मेलन में 'हिन्दी भाषा भूषण' की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया. यह उपाधि उन्हें साहित्य मंडल के प्रधानमंत्री श्री भगवती प्रसाद देवपुरा द्वारा प्रदान किया गया. इस अवसर पर सम्मेलन में विचार गोष्ठी, सम्मान समारोह व साहित्यकारों द्वारा प्रचार-प्रसार व जागरूकता का आयोजन भी किया गया.

सुरेखा शर्मा को साहित्य गौरव

'राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज साहित्य बहुउद्देशिय सेवा केन्द्र' और 'खानदेश एकता साहित्य मंडल' जलगांव, महाराष्ट्र के संयुक्त आयोजन 'राष्ट्रीय पुरस्कार २०१२' में

सुरेखा शर्मा, गुड़गाव को उनकी पुस्तक 'रिश्तों का एहसास' के लिए 'साहित्य गौरव' सम्मान सम्मानित किया गया. सम्मान समारोह में उन्होंने भ्रूण हत्या पर 'अजन्मी कन्या की पुकार' नामक शीर्षक से मर्म स्पर्शी कविता पढ़ी जिसका श्रोताओं ने करतल ध्वनी से स्वागत किया. समारोह के मुख्यअतिथि महाराष्ट्र सरकार के पालक मंत्री श्री गुलाब राव देवकर थे व विशेष अतिथि श्री संघपति दलूभाऊ जैन व श्री अब्दुल मजीद जकेरिया थे.

तुलसी सम्मान हेतु साहित्यिकार चयनित

तुलसी सहित्य अकादमी भोपाल, म.प्र. द्वारा आमंत्रित की गई प्रविष्टियों में से चयन समिति ने कृपा शंकर शर्मा 'अचूक'-जयपुर, राजस्थान, डॉ.देवेन्द्र नाथ साहा, श्री महेन्द्र मयंक-भागलपुर, बिहार, श्री यतीन्द्रनाथ राही-भोपाल, म.प्र., श्री कैलाश श्रीवास्तव-प्रधान-सम्पादक निर्दलीय भोपाल, डॉ.जयशंकर शुक्ल-यमुना बिहार दिल्ली, श्री खुर्शीद नवाब-उदयपुर, राजस्थान, श्री गाफिल स्वामी-अलीगढ़, उ.प्र., श्री महेश कुमार पाण्डेय-उरई, उ.प्र., श्री नीरज शास्त्री-मथुरा उ.प्र., श्री दिनेश कुमार छाजेड़, डॉ.अन्नपूर्णा श्रीवास्तव-रावतभाटा कोटा राजस्थान, डॉ.सुभद्रा खुराना-भोपाल, म.प्र., डॉ.पूनम शर्मा-जबलपुर, म.प्र., डॉ.सुबोध गौर - कोरबा पूर्व, छ.ग., डॉ.लाल जी सहाय श्रीवास्तव-टीकमगढ़, म.प्र., डॉ.हीरालाल जायसवाल-गोंदिया महाराष्ट्र, रेणु सिरोया-उदयपुर, राजस्थान को तुलसी सम्मान-१२ हेतु चयनित किया है. चयनित साहित्यकारों को १७.११.१२ को भोपाल में एक सम्मान समारोह में सम्मानित किया जायेगा. सम्मानित होने वाले साहित्यकार की सम्मान समारोह में उपस्थिति अनिवार्य रहेगी, अनुपस्थित साहित्यकार को सम्मान नहीं दिया जा सकेगा और प्रतिनिधि भी मान्य नहीं होगा.

समीक्षा

बुद्धावतार

प्रस्तुत संग्रह के रचयिता यशराम सिंह 'अडिग' को अभी तक मैं व्यक्तिगत रूप से एक कहानीकार के रूप में जानता था. उनकी कई कहानियों को पढ़ने व संपादन करने का सुअवसर मुझे मिला था. लेकिन प्रस्तुत ३१२ पृष्ठीय आध्यात्मिक काव्य संग्रह जो भगवान बुद्ध के ऊपर लिखा गया है से अडिग जी के काव्य संसार को जानने/पढ़ने का पहला सुअवसर प्राप्त हुआ. इस संग्रह को आध्यात्मिक संग्रह की संज्ञा आसानी से दी जा सकती है. भगवान बुद्ध की महिमा, उनके जीवन काल को बुद्ध के साधक अडिग जी ने संग्रह के पहले शीर्षक 'जन्म और पालन' में बड़े ही सलीके से पेश किया है:-

कहा कुवर ये हंस है मेरा किया शिकार/उस पर मेरा ही सुनो है पूरा अधिकार।।

मैं इसको मरने नहीं दूंगा मेरा भ्रात।/प्राण बचा इस हंस के जीवन दूंगा तात।।

रचनाकार ने भगवान बुद्ध की वेदों के अध्ययन तथा उनके ज्ञान भंडार का कैसे गुणगान किया है देखिए-

सभी वेद पढ़े परन्तु ऋग वेद तथा अर्थवेद थे/विशेष रूप से पढ़े विशिष्ट ज्ञान हेतु ही/और भी दर्शन तथा धर्मशास्त्र पढ़े कुंवर हुए वे प्रवीण पूर्णतः दार्शनिक विषय में। भगवान बुद्ध के जीवन काल की विविध ा घटनाओं को अडिग जी ने सुन्दर शब्दों की लड़ी में पिरोकर इस पूरी पुस्तक में भगवान बुद्ध का जीवन परिचय व कार्य को प्रस्तुत किया है. कुल मिलाकर इस संग्रह व इसके रचयिता अडिग जी के बारे में यही कहा जा सकता है कि अडिग जी

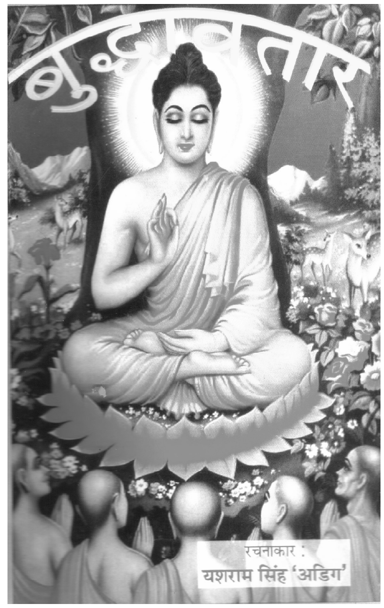

भगवान बुद्ध के चरित्र को काव्यात्मक लड़ी में पिरोकर वास्तव में बुद्ध चरित्र के लिए अडिग हो जाएंगें, जाने जाएंगे. इस सद प्रयास के लिए अडिग जी को हार्दिक बधाई.

समीक्षकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

XXXXXXXXXXXXXXXXXXX

जो समझ सका

कलम को साधना, कलम की साधना और कलम की आराधना कलम के तपोत्थान के क्रमिक सोपान हैं. नगरीय कोलाहल और रेलगाड़ी के डब्बे में होने वाली कचपच के बीच चित्त को स्थिर करके काव्य रचना करना मामूली बात नहीं है. नवलजी के तपोनिष्ठ जीवन में उन्हें इस सार्थक बिन्दु तक पहुंचाया है, वे सराहनीय भी है, धन्य भी.

यात्रा की अविछिन्न निरन्तरता के बीच जन्मी इन सोलह रचनाओं में से इटारसी में सात, गुवाहटी, शिलांग तथा कोलकाता में दो-दो और ट्रेन में चार ये सभी रचनाएं छन्दयुक्त और छन्द मुक्त होकर अपने वेश और परिवेश दोनों को आलोकित करती हैं. इन रचनाओं के आस-पास कवि के प्राणों की पीड़ा के अकुण्ठ स्वरों की सरसराहट को सुना जा सकता है जो अप्रत्याशित उपलब्धि ा के सम्मोहन की विरक्तता के उचाट से प्रगट होती है.

'वैतरणी के तट पर/बैठा हुआ/एक अध्यात्मिक/सत्य की/प्रतीक्षा कर रहा हूं/स्थायित्व पाने के लिए.'

'हेकड़ी', 'स्थानान्तरण', 'सत और साहित्य', 'अक्षर से अक्षर तक' तथा 'मोक्ष का आवेदन' शीर्षकों वाली रचनाएं तुकान्त होकर छन्द बन्धन के निकट से गुजरती है. जो कवि की ललित और रसात्मक भंगिमाओं की उत्प्रेक्षात्मक अभिव्यक्ति हैं.

अन्त में कहना चाहूंगा कि ये १६ रचनाएं १६ कलाओं के साथ अवतरित होकर कहीं वेणु वादन करती हैं, कहीं रास रसास्वादन करती हैं. कहीं भी और किसी भी स्थिति में कलात्मक रच रचाव की प्रशंसा की अधिकारिणी है.

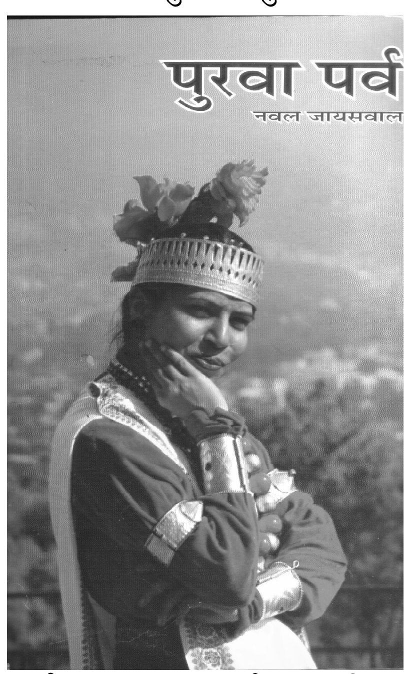

समीक्षकः जंग बहादुर श्रीवास्तव 'बिन्दु'
रचनाकारः नवल जायसवाल
पृष्ठः ८०, **मूल्यः** २५०/रुपये